संयम से सिद्धि : साध्वी भीखांजी

लेखिका : साध्वी डॉ. ललितरेखा
सम्पादिका : समणी डॉ. सत्यप्रज्ञा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संयम से सिद्धि : साध्वी भीखांजी

लेखिका : साध्वी डॉ. ललितरेखा 'खाटू'
संपादिका : समणी डॉ. सत्यप्रज्ञा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राज.) 341306
जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581—222080 / 025
फैक्स : 01581—223280
E-mail : jainvishvabharati@yahoo.com

लेखिका : साध्वी डॉ. ललितरेखा 'खाटू'

संपादिका : समणी डॉ. सत्यप्रज्ञा

प्रथम संस्करण : फरवरी 2012

मूल्य : ₹30 (तीस रूपया मात्र)

मुद्रक : पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

ISBN : 81-7195-221-6
BAR CODE : 978-81-7195-221-2

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सर्वात्मना
सादर समर्पित
निष्कारण–उपकारिणी, सरल–स्वभावी,
सेवाभावी, पुरुषार्थ की ज्वलन्त मशाल
स्व. साध्वीश्री भीखांजी (श्रीडूंगरगढ़) को
जिनकी सन्निधि में 19 बसन्त साधना
करने का स्वर्णिम अवसर मिला।

– साध्वी डॉ. ललितरेखा 'खाटू'

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

11 सितम्बर 2012

उस व्यक्ति का जीवन धन्य होता है, जो संयम और सेवा का जीवन जीता है दूसरों के प्रति अनुकम्पा की भावना रखता है।

साध्वी भीखांजी श्रीडूंगरगढ़ हमारे धर्मसंघ की एक विशिष्ट साध्वी थी। वे आचार्यों की कृपापात्र भी रहीं। साध्वी डॉ. ललितरेखाजी (खाटू) द्वारा प्रस्तुत साध्वी भीखांजी का जीवनवृत्त दूसरों को प्रेरणा देने वाला बनें। शुभाशंसा।

जसोल **आचार्य महाश्रमण**

(राजस्थान)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वीश्री के प्रति
आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के हृदयोद्‌गार

साध्वी भीखांजी 'श्रीडूंगरगढ़' श्रीडूंगरगढ़ के श्रद्धाशील बोथरा परिवार से संबद्ध थी। वे कला कुशल और सेवा भावी साध्वी थी। पूज्य गुरूदेव ने श्रीडूंगरगढ़ (चातुर्मास वि.सं. 2002) में उन्हें दीक्षित किया। वे पहले साध्वी सजनांजी और उसके बाद साध्वी सुन्दरजी की सहवर्ती रहीं। अनेक वर्ष तक सहवर्ती के रूप में यात्राएं की। साध्वी सुन्दरजी की अच्छी सेवा की। उनके स्वर्गवास के पश्चात् आचार्य प्रवर ने उन्हें अग्रणी नियुक्त किया। इन 4–5 वर्षों में वे प्रायः अस्वस्थ रहीं। इस वर्ष उन्हें स्वास्थ्य की दृष्टि से दिल्ली चातुर्मास का निर्देश दिया। 10 अक्टूबर को संवाद मिला– 'साध्वी भीखांजी का हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। जो संयमपूर्वक धर्मसंघ में अपनी जीवन–यात्रा सम्पन्न करते हैं, वे धन्य और कृतार्थ बन जाते हैं।'

15.10.2006

भिवानी (हरियाणा)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भूमिका

साध्वीश्री भीखांजी ''श्रीडूंगरगढ़'' ने अपने जीवन में 74 बसन्त देखें। 12 वर्ष गृहस्थ जीवन में, 62 वर्ष संयम–पर्याय में। उनके जीवन का 74 वर्षों का कालखण्ड अनेक घटनाक्रमों एवं संस्मरणों से सराबोर रहा। उसका संक्षिप्त रेखाचित्र ही इसमें खींचा गया है।

अधरों पर स्वाध्याय सुधा की गुंजायमान गौरव गाथा, साधना में सहज अप्रमत्त योग एवं उपशान्त कषायी, समता का लहराता सागर, स्वभाव में सहज सरलता, व्यवहार में अपनापन, वाणी में ओजस्विता, हृदय में झलकती पवित्रता, मंझला कद, गेहूंआ वर्ण, बड़ी–बड़ी आंखें, सबके बीच सद्गुणों की सौरभ से सुरभित उनका ओजस्वी व्यक्तित्व एवं शांत–गंभीर मुद्रा दर्शक का बरबस ध्यान आकृष्ट कर लेती।

साध्वीश्री की नैसर्गिक सरलता के संस्कार शैशव की साक्षात् स्मृति कराने वाले थे। **''सोही उज्जुय भूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई''** यह आगम सूक्त आपके जीवन का पर्याय बन चुका था। अनेक उपसर्ग एवं परिषह को सहकर भी सदैव संघ हित में कुछ करने की भावना उनके मन–मस्तिष्क में रहती। वह अनुपमेय, अनुकरणीय एवं श्लाघनीय थी। माघ की ठिठुरती सर्दी ने साध्वीश्री को जन्म ही नहीं दिया अपितु स्वभाव में भी शीतलता भर दी।

साध्वीश्री आस्था एवं उत्साह की अक्षय भण्डार थी। सिलाई, रंगाई, रजोहरण–निर्माण–कला एवं लिपि कला में उनकी गहरी रुचि थी। अध्यात्म कामधेनु का जमकर दोहन करने हेतु वे हमेशा स्वाध्याय गंगोत्री में गोते लगाती रही। उनमें संघ एवं संघपति के प्रति पूर्ण समर्पण एवं श्रद्धा के भाव भरे थे। वे अपनी सभी विशेषताओं का श्रेय पूज्य प्रवर को देती थी। उनकी ओजस्वी–वाणी, मधुर गायन, प्रभावोत्पादक प्रवचन शैली सबको सहसा आकृष्ट कर लेती। नित्य नया ज्ञान सीखने की उत्सुकता एवं जिज्ञासा उनमें जीवन पर्यन्त रही। हम को भी नया ज्ञान सीखने की प्रेरणा वे निरन्तर देती रहती थी। साध्वीश्री के पवित्र विचारों का प्रभाव आगन्तुक के हृदय पर नई छाप छोड़ने

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वाला था। बिना किसी विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त किये भी उनके नैसर्गिक गुण आत्मोत्थान की दिशा में गतिशील थे। चाणक्य नीति में वर्णित है –

दातृत्वं प्रियं वक्तृत्वं, धीरत्वमुचितज्ञता।
अभ्यासेन तु लभ्यन्ते, चत्वारः सहजागुणाः। ।

अर्थात् – उदारता, प्रियवादिता, धीरता और उचित एवं अनुचित का विवेक – ये चार गुण उनके अन्तर्मुखी व्यक्तित्व को ऊंचाइयां प्रदान करने वाले थे। सकारात्मक चिन्तन, श्रमशीलता, सहिष्णुता एवं सेवाभावना ने उनके व्यक्तित्व को ऊंचाइयां प्रदान की। उनका ध्येय था –

महान्तो ज्ञानिन सन्ति, महान्तो ध्यानिनस्तथा।
तेभ्योऽपि सुमहान्तश्च, सन्ति सेवा परायणा।
– पंचसूत्रम्

स्वार्थों की फिसलन भरी जमीं से ऊपर उठकर सेवा, जप, तप तथा स्वाध्याय की गहन नींव के सहारे निर्जरा की गगनचुम्बी अट्टालिका उन्होंने निर्मित करने का प्रयास किया। साध्वीश्री की सन्निधि में रहने वाली साध्वियों को वे केवल संस्कार ही प्रदान नहीं करती बल्कि उसके साथ–साथ उनसे स्नेह, सौहार्द शिक्षण–प्रशिक्षण की अनेक रंग–बिरंगी फुलझड़िया भी मिलती थी। जो मन के कोने–कोने में अतिरिक्त रोशनी भर देती।

उन्होंने समाज के दुःख–दर्द को समझा, घावों पर मरहम पट्टी की। उन्होंनें रूग्ण सेवा को सर्वोपरि महत्व दिया। सबको हार्दिक भाव से समाधिस्थ बनाने का प्रयत्न सदैव जारी रखा।

साध्वीश्री का व्यक्तित्व कुछ ऐसे ही परमाणुओं से गुम्फित था जिसमें कषाय के परमाणु स्वल्प थे। घोर वेदना में भी वो सदैव मुस्कुराती रहती थी। उनके प्रत्येक क्रिया–कलाप में सरलता एवं समता की झलक स्पष्ट परिलक्षित होती थी। समता के द्वीप पर उनका एक छत्र साम्राज्य स्थापित करने का, सलक्ष्य प्रयत्न था। उनके हृदयोदधि में दुर्भावनाओं के ज्वार–भाटें कम ही देखने में आये।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उनके समता सूर्य को विषमता के राहु ने संभवतः कम ही ग्रसा। जीवन में आई विषम परिस्थितियों को वे समता के **'रिमोट–कन्ट्रोलर''** से शीघ्र दूर कर देती थी।

सप्तरंगी इन्द्र धनुषी व्यक्तित्व की धनी साध्वीश्री में अनेक कलाओं का संगम था। सृजन चेतना के बन्द कपाटों को वे कला की कोमल अंगुलियों के स्पर्श से खोलने का प्रयास करती। आस्था की ऑक्सीजन, दृढ़ मनोबल की खाद, धीरजता के सलिल ने उनके व्यक्तित्व को सप्तरंगी बना दिया। उन्होंने सेवा की क्यारी में अपनी जीवन फुलवारी को अभिसिंचित किया। अहंकार की कोंपलें उनके मानस पटल पर कभी भी प्रस्फुटित नहीं हुई। वाणी में मधुरता, नयनों में करुणा, हृदय में वत्सलता – ये था उनका चित्ताकर्षक आन्तरिक व्यक्तित्व, जो साधना की ऊंचाइयों को छूने वाला था। साध्वी भीखांजी उस निश्छल व्यक्तित्व का नाम है जिनकी जीवन पुस्तक में दुराव एवं छिपाव जैसे शब्द नहीं थे। उनका जीवन खुली पुस्तक था। जिसे जब चाहे, जहां से पढ़ सकते थे।

मैं अपना सौभाग्य समझती हूँ कि मुझे उनके जैसे सहज–सरल, पापभीरू महान अग्रगण्या साध्वी मिली। आपकी पावन सन्निधि में रहने का मुझे 19 वर्ष का सुअवसर प्राप्त हुआ। आप मेरी जीवन निर्मात्री, एवं संस्कारदात्री थी। आपके पास रहकर मैंने जो कुछ भी सीखा है, वह सब गुरूदेव का आशीर्वाद एवं साध्वीश्री के श्रम की परिणति है। मैंने उनको अति निकटता से देखा है। उनके जीवन केनवास पर ऋजुता, मृदुता, समता, सहनशीलता एवं अनासक्ति की तूलिका से अद्भूत चित्र उकेरे हुए थे।

लेखनी न लिख सके, जो आपके उपकार है।
संस्कारों की सम्पदा, गुणनिधि का न आर–पार है।

देवलोक गमन के एक सप्ताह पूर्व उन्होंने फरमाया था कि तुम लिखती रहती हो, गीत बनाती रहती हो, मेरी जीवनी कब लिखोगी? मेरे लिए भी कुछ बनाओगी या नहीं? मैंने बात को सहजता से लेते हुए निवेदन किया कि महाराज! दिल्ली चातुर्मास के बाद लिखूंगी। मुझे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्या पता कि साध्वीश्री को पूर्वाभास हो गया। सचमुच जीवनी लिखने की घड़ी आ गई। मैंने यह कल्पना कभी स्वप्न में भी नहीं की थी कि साध्वीश्रीजी यों अचानक चले जायेंगे। उनके 74 वर्षीय जीवन को ससीम शब्दों में गुम्फित करना कठिन है। उनके लिए मैं जितना कुछ कर सकूँ, वह अत्यल्प ही रहेगा। क्योंकि –

उनका सरल रूप कल्पना पट्ट पर भी नहीं समाता है ।
कितना कुछ लिखूं, लिखने को बाकी रह जाता है ।।

महामनीषी, महातपस्वी, महाप्राण, महाश्रमण का आशीर्वाद एवं वरदहस्त, महाश्रमणीजी की वत्सलता, मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी एवं साध्वीश्री जिनप्रभाजी का सत्परामर्श ही हर कार्य की सफलता का रहस्य है। प्रस्तुत पुस्तिका पाठकों में सहनशीलता, सेवा, समर्पण, सरलता आदि संस्कारों को जागृत करेगी, ऐसी आशा है। डॉ. समणी सत्यप्रज्ञाजी का कुशल संपादन एवं उपयोगी सुझाव, शासन सेवी श्री फरजन कुमार जी जैन (दिल्ली) का श्रम भी उल्लेखनीय है। साध्वीश्री कमलरेखाजी एवं चन्द्रयशाजी का सहयोग भी स्मरणीय है –

वन्दना के इन स्वरों में, भाव पारावार है।
शब्द सुमनों में समर्पित, आस्था का आगार है।
साध्वीश्री भीखांजी को प्रणत श्रद्धांजलि,
भावों से गूंथी गई, हर स्मृति साकार है।।

– साध्वी डॉ. ललितरेखा 'खाटू'

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रम

01. संयम से सिद्धि **01—29**

जन्म एवं बचपन 01
वैराग्य 02
दीक्षा से पूर्व परीक्षा 04
बंद दरवाजे ने खोली किस्मत 05
जैन भागवती दीक्षा 06
शिक्षण एवं कंठस्थ ज्ञान 06
सेवाभावी एवं व्यवहार कुशल 07
दीक्षा के लिए विशेष प्रेरणा 09
अग्रगामी 09
जिन्दगी के स्वर्णिम पल 10
आचार्यश्री तुलसी की दृष्टि में 10
कष्ट—सहिष्णु 11
सेवाभावी 12
आस्था के चमत्कार 13
प्रेरक प्रसंग 14
ब्रह्मचर्य का तेज 15
देववाणी सफल एवं सत्य हुई 16
मृत्यु से पूर्व दिव्य लोक की यात्रा 17
साहस की अजब नजीर 17
सतत जागरूकता 19
पूज्यवरों की सेवा के सुखद पल 19
संथारे की उत्कृष्ट भावना 19
जैन—जैनेतर की श्रद्धापात्र 20
कुछ स्मृतियां दिल्ली प्रवास की 21
अस्पताल में भर्ती 21
दृढ़ मनोबल 22
कम्युनिटी हॉल में अन्तिम प्रवचन 23
अप्रतिहत धैर्य 23
स्वास्थ्य में गिरावट 24

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अन्तिम चार दिन 24
पूर्वाभास 25
अटूट गुरू भक्ति 25
प्रस्थान की पूर्व तैयारी के संकेत 26
इच्छामृत्यु का वरण 27
देवलोक में जाने का संकेत 27
नियमों के प्रति जागरूकता 28
इतिहास की पुनरावृत्ति 28

02. हार्दिक उद्‌गार 30—42

03. साध्वी भीखांजी : जीवन परिचय 44

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संयम से सिद्धि

आगम सूक्त है 'मुणिणो सया जागरन्ति। 'ज्ञानी सदा जागृत रहते है। 'गीता का सूक्त है– या निशा सर्वभूतानां, तस्यां जागर्ति संयमीः।' अर्थात् जो अन्य सारे प्राणियों के लिए रात होती है, संयमी उसमें भी जागृत रहते हैं। साध्वीश्री भिखांजी का जीवन इस सूक्त का साकार रूप था।

स्वाध्याय से संयम जीवन को पोषक रस का सिंचन मिलता है। साध्वीश्री शुरू से ही श्रम एवं स्वाध्याय के प्रति विशिष्ट लगाव रखने वाली थी। दिन में तो स्वाध्याय– ध्यान–जप का यथासमय क्रम चलता ही, रात को भी निद्रा आदि प्रमाद के बजाय उनका समय स्वाध्याय के प्रति विशेष रूप से समर्पित रहता और इसीलिए प्रायः पश्चिम रात्रि में वे 2 बजे उठकर स्वाध्याय में संलीन हो जाती। माला–जप, अनुपूर्वी के साथ–साथ कुछ भक्ति गीत उनकी दिनचर्या में शामिल थे जैसे विघ्न हरण की ढाल, मुणिन्द मोरा की ढाल, भजिए निशादिन कालू गणिन्द, विमल–विवेक की ढाल, चौबीसी एवं आराधना।

भक्ति योग की इस यात्रा के बाद उनका दूसरा स्वाध्याय क्रम शुरू होता जो भक्तामर, कर्त्तव्य षट्त्रिंशिका आदि से होता हुआ दसवेकालिक तक पहुँच जाता। प्रायः प्रतिदिन दसवेकालिक आगम का पूरा स्वाध्याय वे कर लेते। स्वाध्याय–योग के प्रति सातत्यता व अप्रमत्तता देखकर कोई भी जान सकता था कि मुनि, ज्ञानी कैसे सदा जागृत रहते हैं। साध्वीश्री ने प्रसिद्ध आचारांग – सुक्त को अपने जीवन का सूत्र बना लिया था –

जागरह णरा णिच्चं, जागरमाणस्य वड्ढते बुद्धी ।
जो सुवई ण सो धण्णो, जो जग्गई सो सया धण्णो ।।

जन्म एवं बचपन :–

ऐसी जागृत स्वाध्यायशीला साध्वी भीखांजी 'श्री डूंगरगढ़' के बोथरा परिवार की लाडली थी। उनका जन्म वि.सं. 1989 माघ कृष्णा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चतुर्थी, दिनांक 15 जनवरी 1932, रविवार को हुआ। आपका नाम भीखी रखा गया। अध्ययन दूसरी कक्षा तक हुआ। उनके पिता का नाम श्रीमान् हरखचन्द जी बोथरा एवं माता का नाम श्रीमति जेठी देवी बोथरा था। चार बहिनों व एक भाई के साथ बड़े लाड़ प्यार से आपका शैशव बीत रहा था। अकस्मात–जीवन में एक मोड़ नया आया और आपने अपनी समझ से जीवन की दिशा का निर्धारण कर लिया।

वैराग्य :–

नियति का कोई ऐसा ही योग रहा कि आप बारह वर्ष की थी, उसी समय आपके बड़े भाई मांगी लाल जी बोथरा का स्वर्गवास हो गया। तेरह वर्षीय मांगी लाल जी बड़े होनहार बालक थे। तत्त्वज्ञान सीखना व साधु–साध्वियों की सेवा करना ही उनका मुख्य कार्य था। वैराग्य भाव से भावित वे थे और जल्दी ही दीक्षा लेना चाहते थे। पर सबकी इच्छाएं कब, कहाँ पूरी हो सकी हैं! जीवन एक कांच है, जो ठोकर लगते ही चूर–चूर हो जाता है। जीवन एक खिलौना है, कभी भी टूट सकता है। जीवन संध्या की लाली है, जिसकी आभा क्षण भर में विलीन हो जाती है, जीवन इन्द्रधनुष है, जिसके रंग क्षणभर में विलीन हो जाते हैं। इसलिए कहा गया है–

जिन्दगी इक फूल है, खिल गया तो वाह!
मुरझा गया तो आह।

टाइफाईड की गिरफ्त में आ जाने से मांगी लाल जी को जीने की कोई आशा दिखाई न दी। अपनी छोटी बहिन भीखी को पास में बुलाते हैं और कहते हैं– भीखी! दीक्षा की मेरी प्रबल इच्छा थी, पर लगता है मुझे तो अपनी इच्छा को अपने साथ लेकर ही जाना होगा। डॉक्टर जवाब दे चुके है। जीवन दूर व मृत्यु निकट नजर आ रही है। क्या हमारे परिवार का कोई सदस्य संघ सेवा में समर्पित न हो सकेगा इतना कहते हुए आशा की आंख उनकी बहिन भीखी की ओर उठी और बोले– बहिन! तुमसे आशा है। तुम्हारा जीवन भी सहज, सरल, संस्कारी है, साधु–साध्वियों के प्रति भी तुम्हारा आकर्षण है। क्या तुम दीक्षा लेकर अपना और घर–परिवार का नाम रोशन कर सकोगी, संघ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

में अपना संबंध बना सकोगी? इस तरह अनेक प्रश्न उनके शब्दों व आंखों में थे। मुनिश्री हीरा लाल जी उन्हें दर्शन देने पधारे। श्रद्धा भाव के साथ शरण सूत्र उन्होंने सुना और लगभग आधा घण्टा बाद ही उन्होंने सदा–सदा के लिए आंखें मूंद ली ।

सांस उनकी ही नहीं रुकी, एक बार तो सारे घर–परिवार और पास–पड़ौस की सांसे भी थम सी गई। लेकिन जाने वाले की निवृत्त सांसे कभी प्रवृत्ति में नहीं आती, यह संसार का नियम है और संसार में रहने वाला प्रवृत्ति से मुक्त आखिर कब तक रह पाता है! समय के साथ सब कुछ अपनी गति–प्रवृत्ति में आता गया।

जो प्रश्नों के बीज बालिका भीखी के मानस पटल पर वे जाते–जाते छोड़ गए थे। वे प्रश्न बीज धीरे–धीरे अभीष्ट सिंचन पाते गए, अंकुरित होने का उन्हें सुयोग मिला। जीवन की नश्वरता, संसार की असारता, क्षण भंगुरता जैसी अनेक स्थितियों को गहराई से समझने का मौका मिला और एक साल बाद संकल्प का एक पौधा सामने आ गया – मुझे सांसारिक बंधनों में, मोह–माया में नहीं फंसना है, मुझे अपने जीवन को सार्थक और सफल करना है और इसके लिए मुझे संयम का जीवन स्वीकार करना है। वैराग्य को पुष्पित और परिवर्धित करना है।

साध्वीश्री पानकुमारीजी 'द्वितीय' 'श्रीडूंगरगढ़' का आपको विशेष सान्निध्य एवं सेवा का अवसर मिला। अनुकूल प्रेरणा व पाथेय मिलता गया। स्वाध्याय, तत्व ज्ञान, वैराग्य वर्धक कथाओं, व्याख्याओं के माध्यम से साध्वीश्री ने संयम जीवन की सार्थकता का सिंचन आपको प्रदान किया।

वैराग्य, संयम जीवन व दीक्षा की बात सुन पारिवारिकजन एक बार तो विश्वास ही न कर सके। विविध प्रलोभनों से आपकी दिशा को परिवर्तित करने के प्रयास भी किए गए। लेकिन कहा जाता है–

कर्मवीर मानव के पथ का हर पत्थर साधक बनता है।
दीवारे भी राह बताती मानव जब आगे बढ़ता है।।

विविध परीक्षाओं में सफल होते हुए, विविध प्रलोभनों से बचकर निकलते हुए, आखिर एक क्षण आया जब पारिवारिक जन आपके

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संकल्प के सामने झुक गए और पूज्य गुरूदेव श्री तुलसी के सामने आपको संयम जीवन प्रदान करने हेतु निवेदन करने पहुँचे ।

दीक्षा से पूर्व परीक्षा :–

कहा जाता है– जीवन एक परीक्षा है। इस बड़ी परीक्षा के बीच कितनी–कितनी परीक्षाएं किस–किस रूप में आ सकती है, कहा नहीं जा सकता। वैरागिन बहिन भीखी के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ।

वि.सं. 2002 का चातुर्मास पूज्य आचार्यश्री तुलसी का श्रीडूंगरगढ़ में ही था। अपनी जन्म भूमि ही दीक्षा भूमि बने, यह भावना भीतर में प्रबल होती रही। पारिवारिक जनों की स्वीकृति मिल ही चुकी थी। अब इन्तजार था तो मात्र पूज्यवर की कृपामय अनुज्ञा का। इस विषय में पूज्यवर से निवेदन भी किया जा चुका था।

उस समय श्रीडूंगरगढ़ की ही एक और बहिन छगनी भंसाली (वर्तमान में साध्वी संघमित्राजी) जैन भागवती दीक्षा के लिए तैयार थी और पूज्यवर के श्रीमुख से उन्हें दीक्षा का आदेश प्राप्त भी हो चुका था।

पर, समान क्षेत्र, समान भावना, समान निवेदन और पूज्यवर द्वारा एक का निवेदन स्वीकृत हो जाना व दूसरे का न हो पाना, समझ न आ रहा था। उस समय प्रार्थी की क्या स्थिति बनती है, वह तो प्रार्थी ही जानता है। प्रार्थना की गई और स्वीकृत न हुई– यह भी एक परीक्षा का क्षण था और इस अस्वीकृति के पीछे भी कारण था।

कहीं किसी कर्म के उदय का योग रहा होगा कि एक बहिन ने पता नहीं किस भावना से प्रेरित होकर यह भ्रांति सर्वत्र प्रचारित कर दी कि वैरागण भीखी को एक आंख से पूरा दिखाई नहीं देता और लगता है इसी बात ने दीक्षा में व्यवधान उपस्थित कर दिया ।

पुनःपुनः श्री चरणों में भावना निवेदित करने पर महासती साध्वी प्रमुखाश्री लाडांजी ने बहिन की परीक्षा करनी चाही। परीक्षा हेतु सूक्ष्माक्षर में लिखे पन्ने उन्होंनें निकाले और बहिन को पास में बिठाकर पढ़ने लगे। पन्नों को पढ़ते हुए उद्देश्य पूर्वक पंक्तियों व अक्षरों को छोड़–छोड़कर पढ़ने लगे। यह देख साहस बटोर कर बहिन भीखी ने साध्वीश्रीजी से निवेदन किया। महाराज! आप बीच–बीच में अक्षर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

छोड़–छोड़कर कर क्यों पढ़ रहे हैं? साध्वीश्रीजी ने जैसे ही ये बात सुनी, उन्हें आश्चर्य हुआ? और भी पठन–पाठन से जुड़ी परीक्षा उन्होंने करनी चाही और अंत में पूर्ण आश्वस्त हो गये कि दृष्टि संबंधी कोई दोष इसके नहीं हैं।

एक भ्रांति का निवारण साध्वी प्रमुखाश्रीजी के पास तो हो गया। पूज्यवर के पास बलपूर्वक निवेदन की बात अभी भी अपेक्षित थी। उस निवेदन के लिए किसे माध्यम बनाया जाए? इस बात की टोह में ही बालिका भीखी को एक दिन संयोग मिल गया।

बंद दरवाजे ने खोली किस्मत :–

बचपन कौतुक प्रिय होता है। कौतुक में ही कई बार वे ऐसे कमाल कर जाते हैं कि देखने वाले दांतो तले अंगुली दबाने लगते है। बालिका भीखी ने भी जाने किस प्रेरणा से एक ऐसा ही कौतुक रच डाला।

भाईजी महाराज मुनिश्री चंपालालजी प्रतिदिन के क्रम अनुसार श्री हरखचंद जी बोथरा के नोहरे में पंचमी समिति हेतु पधारे। यह स्थान बहिन भीखी के घर के समीप ही था। इनके पिताजी के अधिकार में ही था। जैसे ही भाईजी महाराज उस नोहरे के अंदर पध ाारे, बहिन ने आव देखा न ताव, तत्काल घर के भीतर से एक ताला व चाबी लाई और नोहरे का दरवाजा बाहर से बंद कर दिया। आवश्यक कार्य निवृत्ति के बाद जब भाईजी महाराज ने बाहर आना चाहा, दरवाजा खोलना चाहा तो देखा– यह क्या? दरवाजा तो बाहर से बन्द हैं। वापस ठिकाने (मूल स्थान) में पहुँचने में विलम्ब भी हो रहा है। क्या व कैसे उपाय किया जाए!

बार–बार कपाट खटखटाया गया, आवाजे लगाई गई– तब बहिन ने मौके का लाभ उठाते हुए कहा – दरवाजा तो मैं खोल सकती हूं, लेकिन एक शर्त के साथ। क्या है शर्त? शर्त यही कि पूज्य गुरूदेव को आप मेरी और से दीक्षा हेतु निवेदन करो। ये वादा करो तो दरवाजा खुल सकता है। बालहठ को भाईजी महाराज ने स्वीकारा। बहिन की भावना को देखा। सारी स्थिति को समझा और बहिन को

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आश्वासन दिया। सपरिवार बहिन भी तैयार हो गई भाईजी महाराज के साथ ही गुरूदेव के पास जाने के लिए। भाईजी महाराज ठिकाने पहुँचे तब तक काफी विलम्ब हो चुका था। प्रवचन भी प्रारम्भ हो चुका था। जैसे ही भाई जी महाराज को देखा। गुरूदेव ने तत्काल अंगुली निर्देश करते हुए कहा– प्रवचन के समय आप इतना विलम्ब से आते हैं तो दूसरों से मैं क्या आशा करूं! तहत् वचन के साथ भाईजी महाराज ने पूज्य वचन को शिरोधार्य किया। साथ ही विनम्र शब्दों में समय देखकर निवेदन किया– पूज्यवर! आज तो विलम्ब बालहठ की वजह से हो गया, इस बालिका की वजह से हो गया और इसके साथ ही सारा घटनाक्रम उन्होंने गुरू चरणों में निवेदन कर दिया।

पूज्य गुरूदेव ने बालिका की प्रबल वैराग्य भावना को जाना यथार्थ स्थिति को समझा और महान अनुकम्पा कर वैरागिन भीखी को दीक्षा का आदेश प्रदान कर दिया।

बालिका खुशी से झूम उठी। भाई मांगीलालजी का चिंतन बीज आज फलवान होने जा रहा था। अपने जीवन को सही दिशा, सही मार्ग और सही मार्ग द्रष्टा जो मिलने जा रहे थे। वर्षों का संजोया सपना फला और वैरागिन भीखी अब दीक्षा के लिए तैयार हो गई ।

जैन भागवती दीक्षा :–

तेरह वर्ष की लघुवय में कार्तिक कृष्णा 8 (अष्टमी) वि.सं. 2002 को गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी के कर कमलों से श्रीडूंगरगढ़ में कचहरी के सामने करीब पन्द्रह–बीस हजार लोगों की उपस्थिति में आपकी दीक्षा हुई। उस समय चार भाई एवं सात बहिनें, कुल इग्यारह दीक्षाएं बहुत हर्षोल्लास पूर्ण वातावरण में हुई। अब मुमुक्षु भीखी साध्वीश्री भीखांजी बन चुकी थी। मुनि पर्याय का प्रतीक रजोहरण आपको दिया गया। साध्वी प्रमुखाश्री लाडांजी ने केश लुंचन कर श्वेत हंसों की टोली में आपको सम्मिलित किया। आचार्य प्रवर ने आपको ओज आहार के रूप में दधि एवं गुड़ मिश्रित कवल प्रदान कर कृतार्थ किया। तेरापंथ धर्म संघ में दीक्षित होने वाली साध्वियों के क्रम में आपका क्रमांक 1171 वां था।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शिक्षण एवं कंठस्थ ज्ञान :–

नवदीक्षित साध्वी भीखी 'समयं गोयम! मा पमायए' इसकी विशेष साधना करती हुई हित शिक्षा के पच्चीस बोल, जाण पणा के बोल, पाना की चर्चा, तेरहद्वार, लघु दण्डक, अल्पा–बहुत, इक्कीस द्वार, बावन बोल, गतागत, कर्म–प्रकृति, संजया, नियंठा, भ्रम–विध्वंशन, पच्चीस–बोल की चर्चा, दसवे–आलियं, भक्तामर, कल्याण–मन्दिर, जैन सिद्धान्त–दीपिका आदि सीखने लगी। दीक्षा होने के पश्चात् साध्वीश्री भीखांजी एक साल तक गुरूकुल वास में रही। उसके पश्चात् 21 वर्षों तक साध्वीश्री सज्जनांजी (बीकानेर) के सिघाड़े (ग्रुप) में परम समाधिस्थ होकर रही। मिलन–सारिता, सेवा–भावना, श्रमपरायणता, सहिष्णुता, स्वाध्यायशीलता आदि अनेक नैसर्गिक गुण आपमें थे। हर कार्य ''निज्जरट्ठिए'' भावना से करती रहती। साध्वीश्री सज्जनांजी से शिक्षा, सेवा, सर्मपण, कला की अनेक विधाएं ग्रहण की।

उत्तराध्ययन सूत्र, जैन तत्व प्रवेश, चौबीसी, आराधना, रूप बसन्त का व्याख्यान, महासती अंजना का व्याख्यान,रामायण, तेजसार का व्याख्यान, हरीशचन्द्र का व्याख्यान आदि अनेक चीजें सीखती, अनेक व्याख्यानों की प्रतिलिपि आदि सुन्दर, सुघड़ लिपि में करती रहती। वे हमेशा – Work is worship. अर्थात् ''कार्य ही पूजा है''– इस सिद्धान्त में विश्वास करती थी। उनका मानना था कि–

A Man of words, not of deeds is like a garden full of weeds.

सेवाभावी एवं व्यवहार कुशल :–

इत्रपूर्ण होने पर भी उसकी सुवास रहती है। गीत पूर्ण होने पर भी उसका अहसास रहता है। संसार में जो शानदार सेवा करता है, समय पूर्ण होने पर भी उनका इतिहास रहता है। कवि सुमनजी ने ठीक कहा है –

वो नेक इंसान ही धरा को जन्नत बनाते हैं।
जो गैरों के जख्म पर सेवा का मरहम लगाते हैं।।

वि.सं. 2023 में साध्वीश्री सज्जनांजी के दिवंगत होने के पश्चात् तपस्विनी साध्वीश्री सुन्दर जी (मोमासर) के सिंघाड़े में 17 वर्षों तक

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रही। उनकी नेत्र ज्योति नहीं होने के कारण आप हर प्रकार की सेवा अग्लान भाव से करती रहती। उनका मानना था कि –

साधु जीवन पाकर भी सेवा अगर किसी की कर न सका ।
दया भाव ला दुखी दिलों के जख्मों को जो भर न सका ।
वह मानव अपने जीवन में शांति कहां से पायेगा।
ठुकराता है जो औरों, को स्वयं ठोकरें खायेगा

सेवा धर्म अति गहन बताया गया है। यह योगियों के लिए भी मुश्किल माना जाता हैं– सेवा धर्मों परम गहनो योगिनामप्यगम्य।

वि.सं. 2031 में साध्वीश्री सुन्दर जी (मोमासर) बीदासर सेवा केन्द्र में रहने वाली प्रथम साध्वी थी। उनके साथ सेवा में रहने वाली साध्वियों के क्रम में आपका प्रथम नाम था। आपने साध्वीश्री सुन्दरजी को प्रज्ञाचक्षु होने पर हर प्रकार से समाधि पहुँचाई। सेवा के साथ–साथ आगम बत्तीसी का भी पारायण किया। सेवा में आने वाले प्रत्येक सिंघाड़े के साथ पय–मिश्री ज्यों घुल मिल जाती। स्वयं समाधिस्थ रहती हुई दूसरों को भी समाधिस्थ बनाने का प्रयत्न करती। यह सत्य है :–

तुमसे जो हिला मिला, वह कमल बन खिला,
आज तक है सिलसिला, तुमसे कोई ना गिला ।।

वि.सं. 2042 श्री डूंगरगढ़ चातुर्मास में साध्वीश्री पूनांजी (सुजानगढ़) के दोनों आंखों का ऑप्रेशन करवाकर उनकी परिचर्या खुद करती। सेवा के साथ–साथ हर वर्ष सावन एवं भाद्रव मास में एकान्तर तप करती। दस प्रत्याख्यान एक वर्ष में एक बार अवश्य करती। बीच–बीच में यथाशक्ति तपस्या भी करती रहती। उनका खाद्य–संयम भी बड़ा गजब था। गोचरी में जो कोई अरस–नीरस वस्तु आती, सबसे पहले आप उनको लेकर निर्जरा करती। उनके तप का विवरण इस प्रकार है–

तपस्या विवरण

उपवास	–	2500 लगभग
बेला	–	33
तेला	–	21

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चोला	—	3
पंचोला	—	2
छह	—	2
सात	—	2
आठ	—	2
नौ	—	2
दस प्रत्याख्यान	—	31 बार

दीक्षा के लिए विशेष प्रेरणा :—

वि.सं. 2030 समदड़ी चातुर्मास में मुनिश्री मदनकुमारजी को विशेष प्रेरणा देकर संयम पथ पर अग्रसर होने के भाव भरे। तत्त्वज्ञान सिखाकर, वैराग्य पुष्टि के अनेक प्रयत्न किये। पंच वर्षीय बीदासर प्रवास में साध्वीश्री पुण्ययशाजी, शीलयशाजी, मंजुयशाजी, धर्मयशाजी के वैराग्यांकुर को धर्म भावना का सिंचन देकर पल्लवित, पुष्पित करने में आपने अपना अमूल्य श्रम एवं समय लगाया। जेठ की तपती दुपहरी में हनुमानमलजी नाहटा के घर जाकर साध्वी शुभ्रयशाजी को दीक्षा देने हेतु मानसिक रूप से तैयार करने के लिए कड़ा परिश्रम किया। अपनी संसार पक्षीय भानजी सायर की वैराग्य भावना को परिपुष्ट करने में साध्वीश्री ने अथक परिश्रम किया। जिसकी बदौलत वे साध्वीश्री संवेगश्री बन सकी। सिसाय (हरियाणा) के चौधरी परिवार की सुकन्या सुदेश सिहाग एवं सीता सिहाग को धर्म मार्ग पर नियोजित किया। साध्वीश्री की प्रेरणा बदौलत वह साध्वी सुमंगलाश्री एवं मुमुक्षु सीता बनी। अनेक लोगों को गुरुधारणाएं करवाई तथा हजारों को व्यसनमुक्त बनाया।

कइयों की जिन्दगी संवारी तूंने,
सोई किस्मत जगाई तूने।
ज्ञान के प्यासों की प्यास बुझाई तूने,
असंयमी को संयम की राह बताई तूने।

अग्रगामी :—

साध्वीश्री सुन्दरजी 'मोमासर' के दिवंगत होने के पश्चात् गणाधिपति गुरूदेव श्री तुलसी ने वि.सं. 2041 जेठ कृष्णा प्रतिपदा को चाड़वास में आपको अग्रगामी का दायित्व सौंपा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आपने बखूबी से उस दायित्व का निर्वहन करते हुए संघ की सेवा की। शारीरिक एवं मानसिक रूप से अस्वस्थ साध्वियों की अग्लान भाव से सेवा करके उन्हें समाधि पहुँचाई।

जिन्दगी के स्वर्णिम पल :–

वि.सं. 2046 छापर मर्यादा महोत्सव के शुभ अवसर पर 521 साधु–साध्वियों की गोष्ठी में साध्वीश्री की सेवा भावना का मूल्यांकन करते हुए, उनकी सेवा भावना की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए आचार्यश्री तुलसी ने उनको बारह महीनों की विगय एवं रजोहरण की बख्शीश की। आचार्यश्री तुलसी के नेतृत्व में आयोजित परीक्षाएं एवं प्रतियोगिताओं में भाग लेकर भी आपने अपना विशेष स्थान बनाया। उसका विवरण इस प्रकार है –

आचार्य श्री तुलसी की दृष्टि में

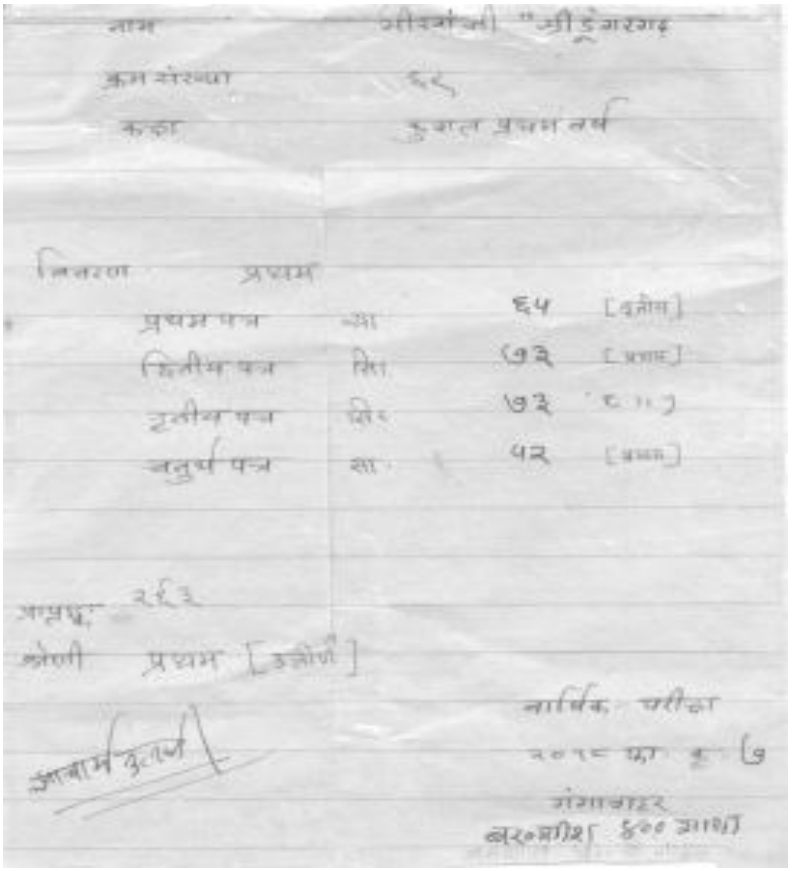

– वि.सं. 2018,फाल्गुन कृष्णा,7, गंगाशहर में कुशल प्रथम वर्ष की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ । उस अवसर पर आचार्य प्रवर ने अपनी करुणा उंडेलते हुए 400 गाथाओं की बख्शीश की।

– साधना प्रवेशिका प्रथम वर्ष, वि.सं. 2021, माघकृष्णा नवमी को परीक्षा में आपने तृतीय स्थान प्राप्त किया। आचार्यश्री ने आपको 51 कल्याणक एवं साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने आपको 31 कल्याणक बख्शीश किये।

प्रतियोगिता	कुल अंक	प्राप्तांक	बख्शीश
सिलाई कला	20	18	21 कल्याणक
लेखन कला	10	9	9 कल्याणक
रजोहरण निर्माण	15	15	9 कल्याणक
नाकी बनाना, बांधना	15	15	9 कल्याणक
फली गूंथना	15	15	9 कल्याणक

लूहर में 21 कल्याणक बख्शीश

अन्त्याक्षरी में 21 कल्याणक बख्शीश

कष्ट–सहिष्णुः :–

वि.सं. 2048, सोजत रोड़ चातुर्मास में उनकी जंघा पर जहरीला अदीठ फोड़ा होने से सारी जंघा के अन्दर मवाद फैल गया। उसके कारण एक माह तक बुखार ने अपना एक छत्र साम्राज्य जमा लिया। अनेक उपचार चले, मगर कोई फायदा नहीं हुआ। भयंकर वेदना में भी साध्वीश्री के चेहरे पर कभी शिकन के भाव नहीं आते। अपितु सेवा करने वाली साध्वियों (साध्वीश्री वसुमतिजी, साध्वीश्री भानुमतिजी एवं साध्वीश्री ललितरेखाजी) को पुनः पुनः कहते रहते कि मेरे कारण तुमको कितनी मेहनत होती है। कृतज्ञता के भावों के कारण अपनी बीमारी को भूल साध्वियों की चिन्ता करने लग जाती। श्रीमती सुन्दर देवी सोनी, विमल सोनी, नेमीचन्दजी, श्री धनराज जी बम्बोली ने भवन में उपचार कराने का निर्णय किया। सोजत रोड़, सोजत सिटी एवं पाली के डाक्टरों की टीम ने मिलकर साध्वीश्री के पैर का ऑप्रेशन करने का निश्चय किया। चिकित्सक दल साध्वीश्री की कष्ट सहिष्णुता

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

देखकर दंग रह गये। बिना बेहोश किये हुए एक घंटे तक शल्य–चिकित्सा चली, ऑप्रेशन के पश्चात् चिकित्सक दल ने कहा– साध्वीजी की सहिष्णुता बेजोड़ है। ऑप्रेशन में एक दिन का भी यदि विलम्ब हो जाता तो पैर काटना ही पड़ता क्योंकि मवाद हड्डी तक पहुंचने वाली थी। इस भयंकर विषैले फोड़े की वेदना को जिस प्रकार साध्वीश्री ने झेला है, इनकी जगह दूसरा कोई होता तो सहन कर पाना मुश्किल होता। साध्वीश्री सहनशीलता को जीवन का मूल मंत्र मानती क्योंकि उनके जीवन का ध्येय था–

सहिष्णुता ही सफलता का मूल है।
कांटों में सुरक्षित रहे, वही फूल है।

सेवा भावी :–

वि.सं. 2045 का चातुर्मास रानी–स्टेशन घोषित था। मांडा (सिरियारी) से विहार कर भूपेन्द्र मूथा की अर्ज पर निम्मली पहुँचे। साध्वीश्री पूनांजी (71 वर्षीय) की हाथ की हड्डी टूट गई। उस समय साध्वीश्री ने उनकी हर प्रकार की सेवा अग्लान भाव से करके उनको समाधिस्थ किया। वि. सं. 2050 में विहार करते वक्त साध्वीश्री पूनांजी की पैर के कुल्हें (चूलियां) की हड्डी टूट गई। मार्गवर्ती छोटे–छोटे ग्राम थे साधनों का अभाव था। पद–यात्रा अपने आप में श्रम–साधना थी। इन सबके बीच साध्वी पूनांजी की सेवा करना बड़ा कठिन कार्य प्रतीत हो रहा था। किन्तु साध्वीश्री ने अपनी हिम्मत दिखाते हुए सहवर्ती साध्वियों से कहा –

दिल किसी का कर सको तो शाद कर,
भूल कर भी मत किसे नाशाद कर।
रोगी, पीड़ित, दुखियों को भगवान समझ,
बन सके तो तुम उसकी इमदाद कर।

अद्भुत सेवा भावना का परिचय देते हुए साध्वीश्री जी ने निर्जरा धर्म को केन्द्र में रखकर खूब सेवा की तथा उनको साता पहुंचाई। मांडा में मात्र तेरह घर श्रद्धा के थे। छह ठाणों से वहां चातुर्मास कर धर्म–ध्यान की गंगा बहाई ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वीश्री भानुमतिजी (गंगाशहर) के रीढ की हड्डी में बॉन टी.बी. होने से आचार्य श्री तुलसी ने साध्वीश्री को सौंपा। साध्वीश्री ने उनके स्वास्थ्य का हर तरह से ध्यान रखा। डिस्क की समस्या होते हुए भी ''काली घाटी'' (सिरियारी से देवगढ़ के बीच पहाड़ों का विकट रास्ता) उन्होंने पार कर लिया। अपनी सहगामी साध्वी के धर्मोपकरणों का वजन अपने कंधों से उठाना बड़ा दुरूह कार्य है। वे दूसरों के दुःख–दर्द को सदैव अपना दुःख–दर्द समझती। स्वयं की परवाह न करके व दूसरों के हितों का विशेष ध्यान रखकर उनके कष्टों को मिटाने का यथासंभव प्रयास करती। उनकी हार्दिक इच्छा यही रहती–

दर्द हो जिस दिल में,उसकी दवा बन जाऊं ।
कांपते हुए लबों को मैं, दुआ बन सहलाऊं ।।

आस्था के चमत्कार :–

वि.सं. 2048 का सोजत रोड़ चातुर्मास। एकदा वहां दो बदमाश डाकू तेरापंथ भवन में घुस गये। दोपहर करीब तीन बजे का समय। वन्दना की, सुखसाता पूछी। साध्वीश्री ने पूछा–आप कहां से आये हो? प्रत्युत्तर मिला– लाडनूं से। साध्वीश्री ने पूछा–गुरूदेव के सुखसाता है? तुम वहां जाते हो क्या? प्रतिदिन दर्शन करते हो? इस प्रकार अनेक प्रश्नों की झड़ी उनके सामने लगा दी। प्रश्नों के उत्तर देते समय वे कुछ टालमटोल कर रहे थे। साध्वीश्री को कुछ सन्देह हुआ। उन्होंने अन्तिम प्रश्न किया– वहां कितने साधु एवं साध्वियां है? छद्मवेषी श्रावक बने डाकू बोले– हम रोज गुरूदेव के दर्शन करने जाते हैं, वहां पांच साधु एवं पांच साध्वियां है।

उत्तर सुनते ही साध्वीश्री को स्थिति समझते देर नहीं लगी। सोजतसिटी के जेलर ने कहा– महाराज! वे डाकू लूटपाट करने की नियत से आये थे। उन्होंने पूछा– बहिनें कब आती है, कितनी आती है? साध्वियां मन ही मन 'ऊँ भिक्षु' का जप करने लगी। साध्वीश्री ने मधुरता के साथ उनको ज्यों–त्यों समझा–बुझाकर बाहर जाने को विवश किया। साध्वियों ने बाहर जाकर कार के ड्राईवर से वार्तालाप किया। तब पता चला कि ये व्यक्ति अच्छे नहीं है। कल ही जेल से छूटे हैं। ड्राईवर ने कहा–

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महाराज! आज का दिन आपके लिए शुभ था जिससे कोई खतरा नहीं हुआ। वरना ये कुछ भी कर देते। साध्वीश्री ने कहा– हमारे पास भीखणजी की शक्ति है। उनका बहुत बड़ा चमत्कार है। उनके सहारे ही हमारा संघ चल रहा है। क्योंकि–

गुरू के अनमोल बोल संजीवन देते,
तूफानों में भी जीवन नौका खेते ।
हर कठिन समस्या का हल गुरू की आस्था,
दिग्भ्रान्त मनुज को मिल जाता है रास्ता ।।

प्रेरक प्रसंग :–

भयहर एवं विषहर– वि.सं. 2047 का चातुर्मास पुर–भीलवाड़ा घोषित था। सिरियारी से काली घाटी पार करते हुए ''तीतरियां महादेव'' पहुँचे। पहाड़ों के बीच एक महादेवजी का मन्दिर, रात्रि में शेरों की भयंकर चिंघाड़, सांय–सांय करता जंगल। रात्रि को 12.00 बजे दो तस्कर वहां आ गये। साध्वियां पूरी रात भिक्षु स्वामी का जाप, घंटाकर्ण मंत्र, उवसग्गहर का पाठ जपती रही। पुर के मीठालाल जी खाब्या आदि चारों श्रावक उनसे बातें करते रहे। बातों बातों में पता चला कि ये चोरी की नियत से आये थे। किन्तु स्वामीजी के जप के प्रभाव से उनका जोर नहीं चला। क्योंकि –

साहसी कदम बढ़े, मुसीबतों को कर नमन ।
आंधियां भी चूम लें, जीत पर मंगल चरण ।।

वि.सं. 2051 में टोहाना चातुर्मास करने से पूर्व 'दशमेशपुर'' में एक पंजाबी परिवार के यहां साध्वीश्री का विराजना हुआ। उनका संयुक्त परिवार था। उनके घर जैन साध्वियों का प्रथम प्रवास हुआ। उनके एक दस वर्षीय बालक को काले नाग ने डस लिया। बालक के मुँह में झाग आने लगे। डॉक्टर के पास ले जाया गया। डॉक्टर ने भी उत्तर दे दिया ।

साध्वीश्री एवं टोहाणा के श्रावक ओमप्रकाश जैन, श्याम लाल जी जैन, मास्टर रायचन्द जी जैन आदि सभी श्रावक चिन्तन की मुद्रा में थे। आज कोई अनहोनी घटना घटित हो जायेगी तो रात्रि में कहां

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जायेंगे। प्रथम प्रवास, जैन साधु–संतों के प्रति इनका भी विश्वास उठ जायेगा। सूर्यास्त का समय, स्वामीजी का नाम लेकर साध्वीश्री ने 'उवसग्गहर का पाठ, घंटाकर्ण–मंत्र, ओम भिक्षु जय भिक्षु' का जाप सुनाया तब जाकर लड़के ने आंखें खोल ली। एक चमत्कार घटित हो गया। गम का माहौल खुशी में परिणत हो गया। क्योंकि –

जिन्दगी का राज वो इंसान ही पा सकता ।
रंज में जो खुशी से गुरू गुण गा सकता ।।

वि.सं. 2053 में रानी स्टेशन चातुर्मास था। धाकड़ी, (पाली) में साध्वीश्री का विराजना हुआ। धाकड़ी श्रद्धा का छोटा सा क्षेत्र। एक चौधरी को कुर्त्ता पहनते समय आस्तीन में बैठे सर्प ने काट लिया। डॉक्टर ने विविध उपचार किये लेकिन राहत नहीं मिली। जेठ की चिलचिलाती धूप में साध्वीश्री एवं मैं (ललित रेखा) चौधरी के घर गए। उसको उवसग्गहर–स्तोत्र, घंटाकर्ण–मंत्र आदि सुनाये। भिक्षु स्वामी एवं गुरुदेव की कृपा से चमत्कार घटित हुआ, मरणासन्न व्यक्ति जीवित हो उठा। सर्वत्र जैन धर्म की प्रभावना हुई।

ब्रह्मचर्य का तेज :–

वि.सं. 2054 में साध्वीश्री का बायतु पदार्पण हुआ। नव निर्मित तेरापंथ भवन में वहां विराजना हुआ। सर्वत्र एक ही बात प्रसारित थी– इस भवन में कुछ उपद्रव संभव है। साध्वीश्री को अपने पर पूर्ण विश्वास था। वे सदैव कहती– कोई भी उपद्रव ब्रह्मचर्य के बल के सामने टिक नहीं सकता। त्याग–तप की अपनी शक्ति होती है। ऐसा सबको कहकर वहीं रात्रि विश्राम किया। कुछ दिन वहां रहना हुआ। बायतु के नव–निर्मित तेरापंथ भवन में चातुर्मास कराने की लोगों की तीव्र भावना थी, किन्तु कुछ लोग इसके पक्ष में नहीं थे।

साध्वीश्री बाड़मेर की ओर विहार करके कव्वास पहुंच गयी। बायतू चातुर्मास वाली साध्वियां अस्वस्थता के कारण बायतू पहुंचने में असमर्थ थी। जन भावना ने गहरा बल पकड़ा। वे कभी गुरूदेव के दर्शनार्थ गंगाशहर निवेदन करने पहुंचते, कभी फोन एवं फैक्स के माध्यम से अपनी भावना रखते।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बायतू एवं बाड़मेर दोनों ही चातुर्मास लेने के लिए कटिबद्ध थे अतः दोनों ही हर संभव प्रयास से साध्वीश्री को अपने–अपने क्षेत्र में ले जाना चाहते थे। इसी पेशोपेश में साध्वीश्री ने दृढ़ता का परिचय देते हुए कहा कि जब तक गुरूदेव के यहां से कोई विश्वस्त व्यक्ति या समाचार नहीं आयेगा तब तक हम यहां से विहार नहीं करेगे। इसी ढाणी में रहेंगे।

पूज्यवरों ने सारी स्थिति के अवलोकनार्थ श्री रतन लाल जी चौपड़ा को वहां भेजा। बायतूवासियों की बलवती भावना देखकर आचार्य प्रवर ने साध्वीश्री का चातुर्मास बायतू फरमाया। बाड़मेर बिना चातुर्मास के कभी नहीं रहा। लोगों को अखरना स्वाभाविक था। लोगों ने अनेक अफवाहें फैलायी। साध्वीश्री ने विरोध को विनोद समझकर बायतू के नवनिर्मित तेरापंथ भवन में सफलता के साथ चातुर्मास किया।

देववाणी सफल एवं सत्य हुई :–

वि.सं. 2058 सींथल चातुर्मास। श्रद्धा के मात्र तेरह घर थे। साध्वीश्री को रात्रि बारह बजे से वमन एवं विरेचन (दस्तें) शुरू हो गयी। तीन महीने तक लगातार रोज लगभग पचास–साठ बार वमन हो जाती। रात्रि में साध्वीश्री बिल्कुल स्वस्थ रहती। सूर्योदय से सूर्यास्त तक बीमार हो जाती। छोटी खाटू से साध्वी ललितरेखा के संसार पक्षीय बहिन मुन्नी बाई सेठिया धर्मपत्नि श्री सुरेन्द्र कुमारजी, स्व. श्रीमती चन्द्रा देवी डूंगरवाल धर्मपत्नि सुमेरमलजी डूंगरवाल, श्रीमती चन्दा देवी बैद धर्मपत्नी श्रीमती बादलचन्दजी बैद (स्व.) का साध्वीश्री के दर्शनार्थ आगमन हुआ।

दर्शनोपरान्त देवानुप्रिय श्री गणपतमलजी डूंगरवाल (साध्वी ललितरेखा के संसार पक्षीयपिताश्री) ने देववाणी की कि इनको (भीखांजी को) क्यों डॉक्टरों को दिखाते हो? इनके शारीरिक बीमारी कुछ नहीं है। कोई अदृश्य शक्ति इनको सता रही है। उसका इलाज करना मेरे वश की बात नहीं है। यह जगह भी आपको छोड़नी होगी। यहां कुछ उपद्रव हो सकते हैं।

यह बात ज्ञात होते ही सभी साध्वियों (साध्वी कमलरेखाजी, ललितरेखा एवं साध्वीश्री भीखांजी) ने घंटाकर्ण, उपसर्गहर स्तोत्र,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अ भी रा शि को नमः, ओम भवणवई ..... ओम जितु ..... आदि अनेक जप–अनुष्ठान, चौबीसी, कोटि जप अनुष्ठान शुरू कर दिये। चम्पालाल जी बैद ने महामृत्युंजय–जप को 17000 बार किया।

देववाणी की सत्यता ज्ञापित करने हेतु अनेक मंत्र, तंत्र, यंत्र का सहयोग लिया गया। सभी क्रियाएं निष्फल हुई। हारकर साध्वीश्री ने संथारा करने का मानस बनाना शुरू किया। सभी दवाइयों का 17 दिन तक परित्याग कर दिया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी, युवाचार्यश्री महाश्रमणजी (वर्तमान आचार्यश्री) एवं साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने महती कृपा करके समणी निर्मलप्रज्ञाजी आदि चार समणीजी को अपना सन्देश देकर भिजवाया। पूज्यवरों का इंगित दवाई का प्रयोग एवं णमो लोए सव्व साहूणं पर विशेष ध्यान केन्द्रित करने का था। क्योंकि–

गुरु अत्राणों के त्राण, विश्व–वत्सल है।
मिलता जिनसे पल–पल, नूतन संबल है।।

पुनः देव वाणी हुई कि अभी 5 साल आयुष्य शेष है। संथारा करने की जल्दी मत करो। देववाणी सत्य हुई। पांच साल बाद आपका संयोग वियोग में बदल गया।

उस विकट बेला में श्री बिरधी चंदजी गंग सींथल आये। उन्होंने एक झाड़ा क्या लगाया, तत्काल साध्वीश्री ठीक हो गई। वमन रुक गयी। उसके ठीक पांच साल पश्चात् ही साध्वीश्री ने अपन आयुष्य पूर्ण किया। देववाणी सफल हुई है।

अलौकिक स्वप्न :–

सींथल चातुर्मास में साध्वीश्री भयंकर बीमारी से ग्रस्त थी। तीन माह तक केवल–पानी की बर्फ पर रही। अन्न–जल कुछ भी लेना संभव नहीं था। एक बार रात्रि में तीन बजे साध्वीश्री ने एक अलौकिक स्वप्न देखा कि वह देवलोक में गई। वहां शासन गौरव साध्वीश्री कमलूजी (जयपुर), साध्वीश्री सज्जनांजी (बीकानेर) आदि कुछ साध्वियां थी। उन्होंने कहा कि भीखांजी! अभी तुम्हारे लिए देव–लोक में जगह खाली नहीं हुई है। शीघ्र यहां से वापिस लौट जाओ। साध्वीश्री भीखांजी ने कहा– अच्छा महाराज! जा रही हूँ। मैं जल्दी में आ गई थी सहवर्ती साध्वियों को

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बताकर भी नहीं आई। आंखें खुल गई। स्वप्न समाप्त हो गया। उसके पांच वर्ष बाद साध्वीश्री देवलोक हुई।

साहस की अजब नजीर :–

वि.सं. 2060 में साध्वीश्री का चातुर्मास भोपालगढ़ के भिक्षु चर्चा स्मृति भवन में हुआ। कोई भी साधु–साध्वियां रात्रि को वहां नहीं ठहरते। लोगों में आम धारणा थी कि इसमें कुछ उपद्रव हो सकता है? साध्वीश्री जब वहां पधारे तब लोगों ने निवेदन किया कि महाराज! आप स्मृति भवन में चातुर्मास करोगे तो हम रात्रि में वहां नहीं आयेंगे, क्योंकि यहां हमें डर लगता है।

साध्वीश्री का सटीक जवाब था कि हमारे पास ज्ञान, ध्यान एवं जप की अलौकिक शक्ति है। उसके सामने आसुरी शक्तियां अपने आप परास्त हो जाती है। अतः हमारा तो स्मृति भवन में चातुर्मास करने का भाव है। रात्रि–विश्राम वहीं हुआ।

सुबह लोगों का आवागमन दुगुना हो गया। तेरापंथी, स्थानक वासी, जैन जैनेतर सभी लोग पूछते– महाराज रात को भय तो नहीं लगा? साध्वीश्री सबकी जिज्ञासा को समाहित करती हुई कहती– भाइयों! डर किस बात का। हम स्वामीजी की शिष्याएं हैं, वे हमारी रक्षा करेंगे। साध्वीश्री को टाईफाईड होने से स्मृति भवन में सात माह तक विराजना हुआ। चारों साध्वियां (साध्वीश्री भीखांजी, कमल रेखाजी, ललित रेखाजी एवं चन्द्रयशाजी) नियमित घंटाकर्ण मंत्र, उवसग्गहर स्तोत्र का जाप करती। साध्वीश्री ने यह साबित कर दिखाया कि –

देव दाणव गंधव्वा, जक्खराक्खस किन्नरा ।
बंभयारीं नमंसंति, दुक्करं जे करेन्ति ते ।

भोपालगढ़ चातुर्मास में श्रद्धा के केवल तेरह घर थे। तेरह घरों में तीन मास खमण (श्रीमती प्रेमचन्द सुराणा, श्रीमती मुन्ना लाल सुराणा एवं शांतिलाल कांकरिया) अठाई, नौ, दस आदि तपस्याएं हुई। धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई। श्री पारसमल–विमला दुगड़ (प्रशिक्षक–मुम्बई) की उपस्थिति में त्रि–दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर श्री सुमेरमल धर्मचंद सुराणा द्वारा लगाया गया ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दाता साहब के मन्दिर की प्रतिष्ठा करवाने जोधपुर नरेश श्री गजेन्द्र सिंह जी स्वयं पधारे। साध्वीश्री ने लोगों के आग्रह पर साध्वीश्री कमलरेखाजी एवं ललितरेखा को वहां भेजा। साध्वी ललितरेखाजी ने वहां वक्तव्य दिया। वक्तव्य को सुनकर जोधपुर नरेश गज सिंह जी बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने अपने भाषण में बार–बार साध्वीश्री के वक्तव्य को उद्धृत करते हुए उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की।

इस प्रकार मात्र तेरह घरों में तीन चातुर्मास माण्डा, सींथल एवं भोपालगढ़ में किये। उसमें जैन–जैनेतर सम्प्रदाय में तेरापंथ धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई। उसमें साध्वीश्री के साहस एवं श्रम के साथ गुरू कृपा बोल रही थी।

सतत जागरूकता :–

वि.सं. 2061, जनवरी 2004 में, हिसार में साध्वीश्री के आंख का ऑप्रेशन हुआ। तीन दिवस के पश्चात् रात्रि 10 बजे अकस्मात् रक्त की वमन शुरू हो गई। श्री लक्ष्मीसागर जैन 'एडवोकेट', प्रोफेसर डी. के. जैन, डॉ. राजेश सिंगला, श्रीमती सुभाष,विनीत जैन (Inspector in Food Supply) सुरेश जैन, जिनेन्द्र जैन आदि ने रात्रि में साध्वीश्री से निवेदन किया – महाराज! ऐसी विषम परिस्थिति में अभी आपको अस्पताल में भर्ती होना जरूरी है।

साध्वीश्री ने दृढ़ता का परिचय देते हुए कहा कि प्राण भले ही जाए लेकिन मैं रात्रि में इलाज नहीं करवाऊंगी। अगले दिन सुबह जिन्दल अस्पताल ले जाया गया।

साध्वीश्री की बीमारी की गंभीरता को देखते हुए सघन चिकित्सा–कक्ष (I.C.U.) में भर्ती होना पड़ा। उन्होंने अपवादिक चिकित्सा का सेवन किसी भी परिस्थिति में नहीं किया। साध्वीश्री का समग्र जीवन अध्यात्म से अनुप्राणित रहा। उनके केन्द्र में शुद्ध आचार, शुद्ध विचार थे। अवशेष कार्य परिधि में चलते रहते। उनकी हर क्रिया में जागरूकता परिलक्षित होती। कोई प्रमाद होने पर सहगामी साध्वियों को तत्काल मृदु–उपालम्भ देने में देरी नहीं करती। उनकी जागरूकता को हम कभी भूल नहीं सकते। वे हमेशा तरोताजा रहेंगी। उनकी आचारनिष्ठा की छाप दिल पर सदा अंकित हैं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पूज्यवरों की सेवा के अन्तिम सुखद पल :–

साध्वीश्री ने 22 दिसम्बर 2005, रोहतक में तीन दिन गुरू सन्निधि में सेवा करके गंगा स्नान किया। साध्वीश्री को गुरूदेव, युवाचार्यप्रवर, साध्वी प्रमुखाश्रीजी एवं साध्वी विश्रुतविभाजी आदि गुरूकुल वास के समस्त साधु–साध्वियों के दर्शन, सेवा एवं मिलकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। साध्वीश्री बहुधा फरमाती कि इस बार जैसी सेवा जीवन में कभी नहीं हुई। इस प्रकार पूज्यवरों की उपासना करके कृतार्थता का अनुभव उन्होंने किया।

संथारे की उत्कृष्ट भावना :–

साध्वीश्री की हार्दिक इच्छा थी कि मैं संथारा किये बिना नहीं जाऊं।

श्री प्रकाश सुराणा (पश्चिम विहार वासी) नवरात्रों में मोरखाणा दर्शनार्थ माताजी के गये। साध्वीश्री ने श्रीमती सुलोचना सुराणा से कहा कि अगर किसी के मुंह माताजी बोलते हो तो मेरे संथारे के समय के बारे में जरूर पूछ के आना।

अखिल भारतीय महिला मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती कनक बरमेचा साध्वीश्री की पावन सन्निधि में काफी सेवा करती। उसके बड़ी सासू महाराज देव रूप में प्रकट होते। साध्वीश्री बहुधा देवता से पूछना चाहती थी कि मुझे संथारा कब करना चाहिए, कितने दिनों का संथारा आने का योग है। इस प्रकार अनेक प्रश्न पूछती। लेकिन उनको संथारा मात्र 11 मिनिट का ही आया।

सूरत पहुंचते ही कनक बरमेचा को आभास हुआ कि साध्वीश्री 27 दिन की मेहमान हैं किंतु किसी को बताया नहीं।

पश्चिम विहार के मिलनसार अपार्टमेंट में मनीष जी जैन अरिहन्त कुमारजी के सुपुत्र रहते हैं। साध्वीश्री अस्पताल में भर्ती थी तब उन्होंने किसी देवानुप्रिय से पूछा– देवानुप्रिय! हमारे महाराज अस्पताल में भर्ती है, वे ठीक होकर आयेंगे या नहीं?

दिव्य वाणी हुई कि वे एक बार अस्पताल से ठीक होकर आ जायेंगे। वे थोड़े दिन यहां रह पायेंगे। अन्त में भविष्यवाणी सत्य हुई।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्योंकि –

जो विधना ने लिख दिया, छट्ठी रात को अंक।
राई घटे, न तिल बढ़े, रे रे जीव निशंक।।

जैन–जैनेतर की श्रद्धापात्र :–

साध्वीश्री का अन्तिम पावस पश्चिम विहार, अर्चना अपार्टमेंट जी.एच. वन–206 की पावन धरा, भिक्षु सुख सदन में हुआ। कॉलोनी के सभी लोग साध्वीश्री के प्रभावक, आकर्षक व्यवहार से बेहद प्रभावित थे। उनके प्रति हृदय से नत–मस्तक थे। साध्वीश्री गुर्दे की बीमारी से पीड़ित होने की वजह से बालाजी हॉस्पीटल में 13 दिन भर्ती रही। 26 सितम्बर को साध्वीश्री जैसे ही अर्चना अपार्टमेंट में पहुंची। सबको बड़ी खुशी हुई। सारी कॉलोनी में हर्ष का माहौल व्याप्त हो गया। दर्शनार्थी भाई बहिनों की बड़ी भीड़ लग गई।

उनके स्नेहिल कर्मठ व्यवहार को ध्यान में रखकर टोहाणा (हरियाणा) महोत्सव वि.सं. 2055 में साध्वीश्री आनन्दश्रीजी ने उनकी विशेषताओं का मूल्यांकन करते हुए लिखा था–

सफर लम्बा न हो सके, तो कोई गम नहीं।
आज तक जितना चले, वो किसी से कम नहीं।।

कुछ स्मृतियां दिल्ली प्रवास की :–

साध्वीश्री कमलरेखाजी के हृदय की शल्य–चिकित्सा करवाने पश्चिम विहार स्थित बालाजी एक्शन अस्पताल में 25.04.2006 को पदार्पण हुआ। रास्ते में ही साध्वीश्री का स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया। वमन एवं विरेचन के कारण सुगर का स्तर भी असंतुलित हो गया। रक्तचाप का स्तर भी असामान्य हो गया। सुगर 550 हो गई। इधर साध्वीश्री को प्रथम मंजिल में भर्ती किया गया। उधर दूसरी मंजिल में साध्वीश्री कमलरेखाजी को ऑप्रेशन हेतु भर्ती किया गया। मैं (साध्वी ललितरेखाजी) एवं साध्वी चन्द्रयशाजी कभी ऊपर, कभी नीचे चक्कर काटती रहती। दोनों साध्वियों की सेवा में केवल दो साध्वियां देखकर अनेक श्रावकों ने समणीजी के लिए गुरूदेव को निवेदन कराने का सुझाव एवं आग्रह किया। मैंने (साध्वी ललितरेखा) एवं साध्वी चन्द्रयशाजी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ने अपने मनोबल एवं सेवा भावना का परिचय देते हुए कहा कि आचार्य प्रवर को मेहनत देकर क्या करेंगे। ऐसी सेवा के विरले अवसर पुनः नहीं आते है। इनकी सेवा करके हमें परम प्रसन्नता का अनुभव होता है। इनके स्नेह एवं सौहार्द को पाकर हमारी सारी थकान स्वतः काफूर हो जाती है। क्योंकि–

तुम्हारे करीब बैठकर, दो घड़ी को हम।
भूल जाते थे दुःख दर्द और गम।।

साध्वीश्री कमलरेखा जी को तीन दिन के पश्चात् अस्पताल से छुट्टी मिल गई। अतः साध्वीश्री कमलरेखाजी एवं चन्द्रयशाजी का श्री प्रकाश चन्द्र सुराणा (तारानगर) के घर 10 दिन का प्रवास रहा।

अस्पताल में भर्ती :–

साध्वीश्री की सेवा का अवसर अस्पताल में 13 दिन मुझे मिला। स्वास्थ्य लाभ होने पर अस्पताल से छुट्टी मिल गई। पश्चिम विहार अर्चना अपार्टमेंट के फ्लैट नं. 0206 (श्री सुखराजजी सेठिया का घर) में विराजना हुआ। जैन–जैनेतर सभी लोग साध्वीश्री को पाकर उत्साही थे। साध्वीश्री की व्यवहार कुशलता एवं विविध रोचक कार्यक्रमों से साध्वीश्री की कॉलोनी में अलग पहचान बन चुकी थी। मृदु व्यवहार सबके दिलों में विश्वास एवं श्रद्धा जमा चुका था। सभी तहे दिल से, साध्वीश्री के पावस प्रवास की हार्दिक कामना करते थे। आचार्य प्रवर ने जन भावना को महत्व देते हुए साध्वीश्री का चातुर्मास पश्चिम विहार की पावन धरा को प्रदान किया। चातुर्मास में संघप्रभावक कार्यक्रमों की एक झड़ी अनायास ही लग गई। साध्वीश्री की गुणग्राही वृत्ति सदैव दूसरों का यशोगान गाती रहती। आत्म प्रशंसा एवं आत्म–ख्याति से वे सदैव दूर रहती। उनकी अनासक्त चेतना अनुपमेय, अनुकरणीय एवं श्लाघनीय थी।

दृढ़ मनोबल :–

पर्युषण–पर्व के आस–पास साध्वीश्री का स्वास्थ्य काफी नरम रहने लगा। श्री श्यामलाल जैन का सम्पूर्ण परिवार सेवा–शुश्रुषा का दायित्व विशेष जागरूकता से निभा रहा था। व्याख्यान कॅम्युनिटी हॉल में होता। साध्वीश्री बड़ी हिम्मत एवं दृढ़ निष्ठा के साथ बड़ी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुश्किल से सीढ़िया उतर कर प्रवचन हॉल में पधारती। आकर्षक एवं ओजस्वी वाणी में आपके प्रवचन को सुनकर सारे लोग अपने भाग्य की सराहना करते। आपका ज्ञान दिन–ब–दिन निर्मल होता जा रहा था। आशुकवि जैसी क्षमता आपमें पूर्णतया आ गयी थी। कोई भी तपस्वी भाई बहिन आता तो आप बिना किसी कागज–कलम के तत्काल सुन्दर गीत सुना देती। अस्वस्थता के बावजूद अपना सारा काम खुद करने का प्रयास करती।

संघर्षों में रही सदा वो शूर थी,
छलकपट से सदा रही वो दूर थी।
जीते जी संग्रह किया संयम धन का,
जब चली तो पूर्णता से भरपूर थी।।

संवत्सरी महापर्व का प्रवचन सायं– 5.45 बजे तक आपने दिया। प्रतिलेखन, प्रतिक्रमण के पश्चात् रात्रि में दस बजे तक संवत्सरी को आपने प्रवचन दिया। श्री फरजन कुमार जी जैन व डालमचन्द बैद ने प्रभावक आचार्यों का जीवन सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया। गंभीर रूग्णावस्था में उपवास, साथ में रात्रि दस बजे तक प्रवचन करना विलक्षण कार्य क्षमता का परिचायक हैं किन्तु

तेजस्वी सम्मान खोजते, नहीं गोत्र बतलाके,
पाते हैं जग में प्रशस्ति वे, निज करतब दिखला के।
हीन मूल की ओर देख, जग गलत कहे या ठीक,
वीर खींच कर ही रहते हैं, इतिहासों में लीक ।।

कम्युनिटी हॉल में अन्तिम प्रवचन :–

9 सितम्बर 2006 को अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का प्रथम दिन था। स्थानकवासी साध्वीश्री कृपा निधि जी के साथ ''आर्ट ऑफ लिविंग'' विषय पर आयकर आयुक्त श्री के.सी. जैन की अध्यक्षता में कार्यक्रम रखा गया। साध्वीश्री को 25 दिनों तक लगभग 50–50 दस्ते प्रतिदिन लग रही थी। बुखार भी निरन्तर रहता। साध्वीश्री फिर भी समभाव से सहन करती रहती। अस्पताल जाने का मानस बिल्कुल नहीं बन रहा था। वे कहतीं– साध्वियों! मैं तो ऐसे ही ठीक हो जाऊँगी लेकिन अस्पताल नहीं जाऊँगी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्री डालमचंद बैद ने साध्वीश्री से निवेदन किया कि साध्वीश्री यदि आप प्रवचन में पधारे तो बहुत अच्छा रहेगा ।

साध्वीश्री ने अपने स्वास्थ्य को गौण कर उनकी भावना का आदर करते हुए बड़ी मुश्किल से सीढ़ी उतर कर कॅम्युनिटी हॉल में पधारी। 25 दिन तक ज्वराक्रान्त एवं दस्तों के कारण खान–पान प्रायः बन्द ही था। 'जीवन जीने की कला–सहिष्णुता' विषय पर ओजस्वी प्रवचन देकर सबको चमत्कृत कर दिया। किसी भी तरह, किसी को भी महसूस नहीं हुआ कि ये 25 दिन से बीमार एवं प्रायः निराहार हैं ।

अद्‌भुत धैर्य :–

प्रवचन के पश्चात वापिस फ्लैट नं. 206 में चढ़ना दुरूह हो गया। एक घंटे की मेहनत के बाद मुश्किल से साध्वीश्री को ऊपर चढ़ाया गया। ऐसी विषम परिस्थिति में भी उनकी समता एवं धैर्य बेजोड़ था। उनकी क्षमाशीलता एवं सहनशीलता देखकर महावीर–वाणी कर्ण कुहरों में गूंज उठती – ''अहो ते उत्तमा खंती !''

स्वास्थ्य में गिरावट :–

पूज्यवरों के निर्देशानुसार 13 सितम्बर को साध्वीश्री को बालाजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। गुर्दे में काफी खराबी हो चुकी थी। रक्त एवं मूत्र में भी काफी इंफक्शन हो चुका था। नसें भी सारी कमजोर होने के कारण ग्लूकॉज लगाना मुश्किल हो रहा था। ऑप्रेशन थियेटर में जाकर पैरों की नसों में ग्लूकॉज लगवाना पड़ रहा था। अनेक बार सूइयां चुभोने पर बड़ी मुश्किलता से पैरों की नस मिलती। ऐसी भयंकर पीड़ा में भी वे सदैव मुस्कुराती रहती। कभी भी किसी के सामने अपनी बीमारियों का दुखड़ा नहीं सुनाती। वे मन ही मन गाती रहती –

जिन कल्पिक साधु, लिये कष्ट उदीरो रे।
तो आव्यां उदय, किम थाय अधीरो रे।।

आपके मृदु व्यवहार की छाप डॉक्टर नर्स आदि समस्त कर्मचारी वर्ग के ऊपर विशेष रूप से अंकित थी। अस्पताल कक्ष में भी दर्शनार्थी भाई बहिनों की भीड़ लगी रहती। 26 सितम्बर को अस्पताल से छुट्टी मिल गई।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

धीरे–धीरे साध्वी जी श्री के स्वास्थ्य में सुधार हुआ। गुर्दे की खराबी फिर न हो जाये, शुगर का सन्तुलन सही रहे– इस कारण डर के मारे साध्वीश्री खाना–पीना कम पसन्द करती। अत्याग्रह करने पर अल्प आहार ही लेती। उनके दिमाग में सदैव यह आदर्श वाक्य चक्कर काटता रहता कि–

भूखे रहना विवशता है ।
खाकर मरना मूर्खता है ।

अन्तिम चार दिन :–

साध्वीश्री के जीवन का एक ही ध्येय था– जीवन भर काम करूंगी। **कर्मशीलता**– बीमारियों से वीरांगना की भांति संघर्ष करती हुई भी कुछ न कुछ कार्य करने की धुन उनके मन में सवार रहती। सहगामी साध्वियों से कहती– सतियां! ऊन लाओ। पूंजणी (छोटा रजोहरण) बना देती हूँ। पात्री लाकर मुझे दे दो, वार्निश कर दूंगी। पुट्ठा जमा दूंगी। झोली लाकर मुझे दे दो, मैं ओट दूंगी।''

साध्वियां प्रत्युत्तर में कहती – महाराज! आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है, पहले स्वास्थ्य–लाभ फिर दूसरा काम स्वयं हो जायेगा। फिर भी वे सोना पसन्द नहीं करती। स्वयं का कार्य स्वयं करना ज्यादा पसन्द करती। यदि दूसरों से करवाना पड़ता तो उनके मन में गहरा बोझ एवं कृतज्ञता के भाव रहते। अन्तिम दिन भी स्वयं के वस्त्र–प्रक्षालन स्वयं किये। अन्तिम दिन गोचरी में घृत मिश्रित चावल आये। उन्होंने उसे लेकर रख लिया। जब सारी साध्वियां दोपहर में विश्राम करने लगी तब सर्फ से चावलों को धोकर चार मुख वस्त्रिका स्वयं जमा कर रख दी। यह थी उनकी कार्य कुशलता एवं निर्जरा करने की भावना। किसी ने ठीक कहा है –

धुन के पक्के कर्मठ मानव, जिस पथ पर बढ़ जाते हैं ।
एक बार तो रौरव को भी, स्वर्ग बना दिखलाते हैं ।।

पूर्वाभास :–

देवलोक गमन से चार दिन पूर्व तक निरन्तर साध्वियों से मधुर भाषा में कहती– साध्वियों! तुम हिम्मत करके मुझे संथारा करवा दो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वियां निवेदन करतीं– महाराज! अब तो आप बिल्कुल ठीक हो आहार भी पूरा चलता है। इस हालत में संथारा करना उचित नहीं लगता।

चार दिन से लगातार उनको मनुष्य लोक की गंध आने लग गई। राज जैन, मंजू बैंगाणी, रघु कासीद, साध्वी चन्द्रयशाजी, कमलरेखाजी, ललितरेखाजी आदि जिस किसी को देखती, वे कहती– यहां भयंकर बदबू आ रही है। सब कहते– महाराज! हमें तो किसी प्रकार की बदबू नहीं आती है।

साध्वीश्री के हथेलियों को सूंघकर मैंने (ललित रेखा) ने कहा कि महाराज! आपके अच्छे तेल की मालिश कर देंगे फिर बदबू नहीं आयेगी।

दो दिन पूर्व साध्वीश्री ने चन्द्रयशाजी को अपनी दो डायरियां देते हुए कहा– इन दोनों (साध्वी कमलरेखा एवं ललितरेखा) को तो समय नहीं मिलता तुम इसको जरूर पढ़ना।

अटूट गुरू भक्ति :–

08.10.2006, दो दिन पूर्व, पन्ना लाल जी बैद, शांतिलालजी जैन, हेमराजजी बैद को अनेक दृढ़ निष्ठा के संस्मरणों के साथ गुरू की महिमा का गान करते हुए कहा– गुरूदेव तीर्थंकर के दूसरे रूप हैं। इनके आभार को मैं किन शब्दों में बयान करूं! इन्होंने सदैव मेरे ऊपर एवं मेरे साथ वाली साध्वियों पर पूर्ण कृपा–दृष्टि बरसाई है। सींथल में मेरे लिए सन्देश लेकर समणी निर्मलप्रज्ञा जी आदि समणीजी को भिजवाया। आचार्यप्रवर, युवाचार्यप्रवर, साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने अनेक सन्देश मेरे पर कृपा कर भिजवाये। हिसार, बीकानेर, दिल्ली में अच्छी चिकित्सा करवाकर मुझे कृतार्थ कर दिया। ऐसे महान गुरू जन्म–जन्मान्तर में मिलने मुश्किल हैं। जो शिष्य गुरू के गुणों का बखान नहीं करता, वह शिष्य बिना नाक के मुंह जैसा सुन्दर है। श्रावकों को इस ओर सावधानी बरतनी चाहिए।

नाव मिली, केवट मिला, मिली सुघड़ पतवार।
अब क्या चिन्ता है मुझे, पहुंचूं भव के पार।।

प्रस्थान की पूर्व तैयारी के संकेत :–

1. एक दिन पूर्व, दिनांक 09.10.2006 को लगभग 10 बजे साध्वीश्री ने ललित रेखा को अपना रजोहरण, उसकी नई खोली, वगैरह देते

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हुए कहा– तुम इसे डाल लो। पुराना रजोहरण मुझे दे, मैं उसकी पूंजणी बनाऊंगी। तुम्हारे पास जो नया है, वह गुरूदेव को भेंट कर देना।

2. एक दिन पूर्व, 09.10.2006 की रात्रि में 8 बजे श्यामलाल जी जैन की माता अंगूरी देवी उनके समीपस्थ सामायिक कर रही थी।

साध्वीश्री ने कहा– देखो श्यामलालजी की मां! संभवतः यहां बाजे बजेंगे।

उन्होंने प्रत्युत्तर में कहा– महाराज! ऐसी बात मत करो, अभी हमें सेवा करने दो।

3. एक दिन पूर्व श्री स्वरूपचंदजी बरड़िया को साध्वीश्री ने सारी कलात्मक वस्तुएं दिखायी। जीवन की छह अवस्थाओं का चित्र दिखाते हुए मृत्यु की यथार्थता के माध्यम से अपनी मृत्यु का संकेत दिया।

दिनांक 9.10.2006 की पश्चिम रात्रि, करीब 4 बजे साध्वी ललित रेखा ने एक स्वप्न देखा। स्वप्न मे ही बार–बार सुबक–सुबक कर रोने लगी। पास सोई बहिन मंजू बैगाणी ने साध्वी ललितरेखा को जगाया और रुदन का कारण पूछा।

सुबह साध्वीश्री के पास आलोयणा (धारणा) लेने साध्वी ललितरेखा गई तो मंजू ने साध्वीश्री को स्वप्न की बात निवेदित की। साध्वीश्री भीखाजी ने कहा– ललितरेखा! डरने की कोई बात नहीं हैं, जो स्वप्न में रोता है, वही यथार्थ जगत मे हंसता है।

स्वप्न की बात दिन में आई–गई हो गयी लेकिन उसी शाम को 7.51 बजे साध्वीश्री ने स्वप्न को सत्य कर दिया।

इच्छामृत्यु का वरण :–

करवा चौथ की सुबह, (10.10.2006) साध्वीश्री ने ललित रेखा जी से कहा– साध्वीश्री सजनांजी (बीकानेर), साध्वीश्री सुन्दरजी (मोमासर) जिनके साथ मैं 17 वर्ष रहीं, मेरे संसार पक्षीय भ्राता मांगीलालजी, तुम्हारे पिताश्री (गणपतमलजी डूंगरवाल) देवलोक में बैठे–बैठे क्या कर रहे हैं? क्यों नहीं मुझे संथारा करने का बताते हैं?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मैंने कहा– ''महाराज! आप क्यों इतनी जल्दी कर रहे हो? आपको यहां क्या दुःख है? सेवा में कोई कमी है तो मुझे बताइये?''

साध्वीश्री– ''मेरे को कोई दुःख नहीं है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जैसे गुरू मिले हैं, तेरापंथ धर्मसंघ जैसा संघ मिला है। तुम तीनों ही साध्वियां सेवा में संलीन हो। कमी तो कुछ नहीं है लेकिन कमलरेखा जी तुम मुझे संथारा अवश्य करवा देना। ललित रेखा तो मुझे संथारा करवा नहीं सकेगी क्योंकि इसका मेरे प्रति मोह अधिक है। यह हिम्मत तुमको करनी पड़ेगी।

देवलोक में जाने का संकेत :–

देवलोक गमन से लगभग 4 घंटे पूर्व, 3.30 बजे, साध्वी चन्द्रयशाजी ने साध्वीश्री से कुछ अल्पाहार ग्रहण करने के लिए निवेदन किया।

साध्वीश्री– मैं कुछ भी नहीं लूंगी।

चन्द्रयशा जी– तो फिर संथारा करवा दें क्या?

साध्वीश्री– तुम कौन होती हो मुझे संथारा करवाने वाली? अभी तो तुमसे कलमरेखाजी एवं ललितरेखाजी दो साध्वियां बड़ी है।

मैं तो संभवतः चंद मिनटों में जाऊंगी और बारहवें देवलोक में जाऊंगी।

2.30 घंटे पूर्व साध्वीश्री ने ललितरेखा से कहा– देख बाई! मैं कभी भी स्थिरवासिनी नहीं होऊंगी।

ललितरेखा– महाराज! आप इस बात की चिन्ता न करें। संभवतः आपके जीवन में ऐसा अवसर कभी भी नहीं आयेगा।

(ईं बात की कांई चिन्ता करो हो, इस्यो अवसर आपके जीवन में कदेई आवलो ही कोनी।)

नियमों के प्रति जागरूकता :–

सायंकालीन प्रतिक्रमण साध्वीश्रीजी ने बैठे–बैठे पूरी सजगता के साथ साध्वी चन्द्रयशाजी से सुना। कुछ समय सेवा के बाद साध्वी चन्द्रयशाजी 'सूयगडो' पढ़ने के लिए पास वाले कक्ष में जाने लगी तब

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वीश्री ने साध्वी चन्द्रयशा जी से कहा– विज्ञप्ति यहां से लेती जाओ। मेरे मोतियाबिन्द आने के कारण पढ़ी तो जायेगी नहीं।''

साध्वीश्री कमलरेखाजी– लो महाराज! आपको विज्ञप्ति पढ़कर मैं सुनाती हूँ। पूरी विज्ञप्ति उन्होंने तन्मयता के साथ सुनी। जब स्मृति संबल के समाचार आये तब साध्वीश्री ने फरमाया कि विज्ञप्ति इतनी ही सुना। मेरा जी घबरा रहा है।

इसी बीच कनक (लाभचन्द) दुगड़ अपने बच्चों के साथ दर्शनार्थ आई। इससे पूर्व श्री श्याम लाल जैन की धर्मपत्नि राजबाला जैन साध्वीश्री की सेवा में उपस्थित थी। साध्वीश्री के दोनों पैरो में कुछ नीलापन दिखाई दे रहा था। यूरिन में इंफेक्शन कहीं बढ़ नहीं गया हो। अतः परीक्षण हेतु साध्वियां डॉ. नीरज जैन के घर पहुँची।

साध्वियों ने साध्वीश्री को हॉस्पीटल ले जाने का आग्रह किया।

साध्वीश्री– अब मैं कभी भी हॉस्पीटल में भर्ती नहीं होऊंगी।

7.30 बजे धनपतराय जी जैन साध्वीश्री के दर्शन करके नीचे सीढ़ियां उतरे।

7.35 बजे साध्वीश्री ने राज कमलरेखाजी, ललितरेखाजी तथा चन्द्रयशाजी को बाहर भेजा ।

इतिहास की पुनरावृत्ति :–

7.37 बजे, 2 मिनट पश्चात् गिरने की आवाज सुनाई दी। कनक दूगड़ से साध्वी ललितरेखा ने कहा कि कनक गिरने की सी आवाज आई है। लगता है तेरा मुन्ना गिर गया है क्या? सुश्री मितिका ने बाहर जाकर देखा कि साध्वीश्री कमरे में फर्श पर वंदन मुद्रा में गिरे हुए हैं, दोनों हाथ जुड़े हुए (वंदनमुद्रा) पूर्व दिशा की ओर। तत्काल साध्वियां वहां पहुंची, क्योंकि मृत्यु से कुछ समय पूर्व साध्वीश्रीजी ने सभी साध्वियों को बाहर जाने का निर्देश देते हुए कहा– ''तुम सब बाहर जाओ, मेरा जी मिचला रहा है।'' अतः साध्वियां पास वाले कक्ष में थी। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए। साध्वीश्री को अच्छी तरह जमीन पर ही लिटाया। सिर पर काफी सूजन आ गई, वहां दबाया। राजबाला, कनक दूगड़, मंजू बैद, सरोज एवं विनीता भंसाली आदि बहिनों ने स्थिति को देखते हुए संथारा पचखाने का निवेदन किया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वीश्री कमलरेखाजी ने मन को मजबूत करके चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान 7.40 पर करवाया। साध्वीश्री ने आंखे खोली, संथारा सरधा। इधर करवा चौथ का चांद देखने को बेताब सज– धजकर सन्नारियां पूजा का थाल लेकर छत पर खड़ी थीं। उधर 'ओमभिक्षु– जय तुलसी', नमस्कार मंत्र का जाप सुनाया जा रहा था। खुली पलकें, एक दिव्य चांदनी इस धरा से 7.51 बजे सदा–सर्वदा के लिए विदा हो गई। साध्वीश्री भीखांजी की जिन्दगी में यह भी एक संयोग था कि कृष्णा चतुर्थी को जन्मे और कृष्णा चतुर्थी को अलविदा कह चले। उसी दिन अंग्रेजी के दसवें महीने की दसवीं तारीख थी। सन् 2006 था तो फ्लैट नं. 206 था। जिस प्रकार भगवान महावीर ने अंतिम समय में गौतम स्वामी को दूर भेजा, उसी प्रकार आपने अपनी सहवर्ती सभी साध्वियों को दूर भेजकर इतिहास की पुनरावृत्ति की।

न हाथ थाम सके, न पकड़ सके कोई दामन ।
बड़े करीब से उठकर तुम कहां चली गई ।।
तलाशते ही रह गये, आंख में रही नमी ।
पुकारते ही रह गये, मौत फिर कहां थमी ।।

साध्वीश्री इस धरा से जरूर विदा हो गई किन्तु उनकी यशः काया आज भी अमर है। उनके गुण, उनकी विशेषताएं हमारे जिस्म एवं जेहन में अंकित है। वे हमारे दिल–दिमाग से कभी भी धूमिल नहीं हो सकते। काल के भाल पर वे अक्षुण्ण रहेगें। समय का आवरण उसे कभी भी धुंधला नही कर सकता। क्योंकि उनका जीवन केवल शब्दों की शतरंज नहीं था तूफान की छाती को चीर कर गन्तव्य पाने का पौरुष था, श्रम और स्मृति का परिदृश्य था, श्रद्धा, समर्पण की गौरवगाथा था।

यह अमिट जीवन ज्योति हमेशा जलती रहेगी और हमारे संयम जीवन में नये रंग भरती रहेगी। वह दिव्यमूर्ति सदेह रूप में हमारे समक्ष उपस्थित नहीं है किन्तु अदृश्य रूप में मुझ में जरूर नई प्रेरणा, नया स्पन्दन, नई ऊर्जा एवं अभिनव शक्ति भरती रहेगी। ऐसी महान् आत्मा के प्रति मैं सादर श्रद्धा से प्रणत हूं। उनके असीम उपकारों की स्मृति मात्र से मैं गद्गद् हूं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

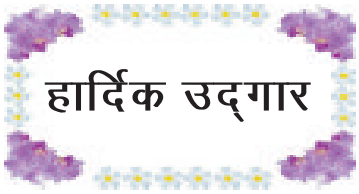

हार्दिक उद्‌गार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

आचार्य प्रवर, युवाचार्य प्रवर एवं साध्वी प्रमुखाश्रीजी द्वारा प्रदत्त मंगल–सन्देश (संभाल)

साध्वी भीखांजी ''श्रीडूंगरगढ़!

तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं है, ऐसा ज्ञात हुआ है। अब क्या स्थिति है? विहार कितना हो सकता है? पारस्परिक सामंजस्य सबका ठीक होगा? एक वैरागी वहां तैयार हुआ था, उसके बारे में कभी ध्यान दिया या नहीं? समणी निर्मलप्रज्ञा आदि समणियां आ रही है। जो आवश्यक लगे, वैसा निवेदन करा देवें।

आचार्य महाप्रज्ञ
बीदासर
4.11.2001

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सन्देश (अनुकम्पा)

अर्हम्

साध्वी भीखांजी ''श्री डूंगरगढ़''

स्वास्थ्य में कठिनाई है, ऐसा संवाद मिला है। मनोबल बना रहे, चित्त समाधि बनी रहे। निर्भीक भावना के साथ जप और संकल्प का प्रयोग चले।

तीनों साध्वियां खूब प्रसन्न चित्त से स्वाध्याय आदि ध्रुव योगों के प्रति सजग बनी रहे। साध्वी भीखांजी शीघ्र स्वस्थ होकर खूब अच्छा काम करती रहें।

मंगल कामना
युवाचार्य महाश्रमण
17 सितम्बर 2001
बीदासर (राज.)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सन्देश (संबल)

अर्हम्

साध्वी भीखां जी ''श्री डूंगरगढ़'' का स्वास्थ्य अनुकुल नहीं हैं। ऐसा ज्ञात हुआ है। जप का प्रयोग तो चले ही, उसमें भी ''सव्वसाहूणं'' का विशेष जप चले और पेट पर ध्यान केन्द्रित कर संकल्प करें कि मेरा पेट ठीक हो रहा है..... मेरा पेट ठीक हो रहा हैं.....। थोड़ी दवाई भी सहयोग कर सकती है, इसलिए भले आयुर्वेदिक हो, भले होम्योपैथिक हो, थोड़ा साधन रखना चाहिए और मानसिक प्रसन्नता रखें। निराश नहीं होना चाहिए। पुरूषार्थ करना आदमी का फर्ज होता है। सभी साध्वियां खूब अच्छा काम करती रहे।

युवाचार्य महाश्रमण

बीदासर 28.10.2001

दोपहर 1.20 बजे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सन्देश (शुभाशंसा)

अर्हम्

साध्वी भीखां जी ''श्रीडूंगरगढ़'' खूब चित्त समाधि में रहे। अच्छी तरह चिकित्सा करा लें। कायोत्सर्ग, जप आदि का भी प्रयोग यथा संभव चले। सहवर्ती साध्वियों से भी उन्हें पूर्ण समाधि का योग मिलता रहे। मंगल कामना।

युवाचार्य महाश्रमण
जैन विश्व भारती, लाडनूं
30.01.2005

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सन्देश (विश्वास)

अर्हम्

साध्वी भीखां जी ''श्रीडूंगरगढ़''!

सुख पृच्छा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। खूब अच्छा काम करें।

आचार्यश्री ने कृपा कर साध्वी चन्द्रयशाजी को आपके पास भेजा है। खूब सामंजस्य से रहें।

सभी साध्वियां पारस्परिक सौहार्द के साथ खूब अच्छा काम करें।

युवाचार्य महाश्रमण

24.2.2002

पचपदरा (राज.)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सन्देश (सार–संभाल)

अर्हम्

साध्वी भीखांजी ''श्रीडूंगरगढ़''

सुखपृच्छा।

आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मानसिक प्रसन्नता रखें। सहवर्ती सभी साध्वियों से सुख पृच्छा। सब खूब अच्छा काम करती रहें।

युवाचार्य महाश्रमण
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)
2.3.2005

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सन्देश (वत्सलता)

अर्हम्

साध्वी भीखां जी ''श्रीडूंगरगढ़'' का स्वास्थ्य काफी नरम चल रहा है। सींथल जाने के बाद प्रायः यही स्थिति रही है। साध्वी कमलरेखाजी व ललितरेखाजी पूरी सेवा कर रही है। गांव के श्रावक–श्राविकाएं जागरूक हैं। चिकित्सा भी चली पर अपेक्षित लाभ नहीं हुआ। कारण समझ में नहीं आ रहा है ।

जप, अनुप्रेक्षा एवं संकल्प का प्रयोग कर उपचार कराएं। स्वास्थ्य के लिए मंगल कामना।

साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा
3.10.2001
बीदासर (राज.)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सन्देश (शुभाशंसा)

अर्हम्

आदरास्पद साध्वी भीखांजी ''श्रीडूंगरगढ़''!

सादर वंदना एवं सुख पृच्छा। आचार्यवर की मंगलमय सन्निधि में मर्यादा–महोत्सव सम्पन्न हुआ। इस वर्ष आपका शरीर काफी अस्वस्थ रहा। सींथल के श्रावकों ने बहुत जागरूकता रखी। अब गुरूदेव के निर्देशानुसार बीकानेर–गंगाशहर में चिकित्सा चल रही है।

साध्वी कमल रेखा जी और ललित रेखा जी ने पूरे मनोयोग से सेवा की। अब संकल्प, जप आदि का प्रयोग कर विशेष स्वास्थ्य लाभ करें।

आपकी प्रार्थना को ध्यान में रखकर आचार्यवर ने साध्वी चन्द्रयशाजी को आपके पास भेजने की कृपा की है। वे साध्वीश्री राजकुमारीजी के साथ वहां पहुंच रही है। उन्हें अच्छी तरह संभाल लेना। चारों साध्वियां पूरी चित्त समाधि से रहना। महोत्सव के पूरे संवाद उधर आने वाली साध्वियों से सुनना।

साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा

23.02.2002

पचपदरा (राज.)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सन्देश (प्रेरणा–पाथेय)

अर्हम्

आदरास्पद साध्वीश्री भीखां जी (श्रीडूंगरगढ़)

सादर वंदना एवं सुख पृच्छा। आप चिकित्सा के लिए हिसार पहुंचें, वहां चिकित्सा की अच्छी सुविधा है। आंखों की चिकित्सा करानी थी पर सुगर के कारण एक बार जटिलता बढ़ गई। संवाद मिला कि अब कुछ ठीक है। समय की अनुकूलता के साथ स्वास्थ्य लाभ करें। तत्रस्थ सभी साध्वियों से सुख पृच्छा।

ध्रुवयोगों की साधना के प्रति जागरूक रहें। सबकी साधना एवं स्वास्थ्य के प्रति मंगल–कामना।

साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा
2.3.2005
लाडनूं (राज.)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सन्देश (शुभकामना)

अर्हम्

हिसार में साध्वीश्री भीखांजी के आंख का ऑपरेशन अच्छी तरह हो गया, पर कुछ अन्य समस्याएं पैदा हो गई। लगता है असाता वेदनीय कर्म का प्रबल उदय है। साध्वी कमलरेखाजी, ललितरेखाजी और चन्द्रयशाजी अच्छी सेवा कर रही हैं। श्रावक समाज भी अपने दायित्व के प्रति जागरूक है। जप, स्वाध्याय और अनुप्रेक्षा का अभ्यास करें।

स्वास्थ्य के लिए मंगल कामना।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

14.2.2005

लाडनूं (ऋषभ द्वार)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सन्देश (मंगल–कामना)

अर्हम्

साध्वी भीखां जी ''श्रीडूंगरगढ़'' के आंख का ऑपरेशन हुआ किन्तु कुछ दूसरी तकलीफे बढ़ गई इसलिए उन्हें सघन चिकित्सा कक्ष (I.C.U.) में रहना पड़ा। सब साध्वियों ने अच्छी सेवा की। श्रावकों ने भी अपनी पूरी जिम्मेदारी निभाई।

जप, संकल्प और अनुप्रेक्षा का प्रयोग करें। जल्दी स्वास्थ्य लाभ करें। ध्रुव योगों के प्रति जागरूकता रखें। स्वास्थ्य के प्रति मंगल–कामना।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
30 जनवरी 2005
लाडनूं (ऋषभ द्वार)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रणाम!
प्रणाम!!
शत–शत नमन!
वंदन!
अभिवंदन।
जीवन परिचय
संयम से सिद्धि की राह पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी भीखांजी : जीवन परिचय

जन्म नाम	–	भीखी कुमारी बोथरा
जन्म स्थान	–	श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर, राज.)
जन्म तिथि	–	माघ कृष्णा 4, वि.सं. 1989
पिता का नाम	–	श्रीमान् हरखचंदजी बोथरा
माता का नाम	–	श्रीमती जेठीदेवी बोथरा
वैराग्य का कारण	–	भ्राता श्री मांगीलालजी की आकस्मिक मौत
दीक्षा वय	–	तेरहवें वर्ष में
दीक्षा समय	–	वि.सं. 2002 कार्तिक कृष्णा अष्टमी
दीक्षा का नाम	–	साध्वीश्री भीखांजी (श्रीडूंगरगढ़)
दीक्षा गुरु	–	गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी
दीक्षा स्थान	–	श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) राज.
अग्रगामी	–	जेठ कृष्णा एकम्, वि. सं. 2041
कला	–	सिलाई–रंगाई, रजोहरण बनाने की कला में दक्ष, लिपि कला सुघड़ एवं सुन्दर।
शिक्षा	–	दशवैकालिक, उत्तराध्ययन सूत्र, थाकेड़े, आगम बत्तीसी का वाचन
पारिवारिक दीक्षा	–	साध्वीश्री संवेगश्रीजी (श्रीडूंगरगढ़) संसार पक्षीय भानजी

ISBN 81-7195-221-6

₹30

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org